ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश



भगवान झूलेलाल जयन्ती
सोमवार 22 मार्च 2004

15 मार्च 2004

वर्ष 24
अंक 5

वार्षिक शुल्क
रूपये 50 भारतवर्ष में
रूपये 350 विदेश में

ॐ श्री सतनाम साक्षी

महाकुम्भ पर्व उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का अन्न क्षेत्र (छावनी)

15 अप्रैल (गुरूवार) से 4 मई (मंगलवार) 2004 तक

क्षिप्रा तट उज्जैन में,
कुम्भ पर्व स्नान ।
सन्त दरस सत्संग कर,
पाओ शान्ति सुजान ।।

83 वां चैत्र मेला

कलियुग में प्रधान है,
सेवा पुनि सत्संग ।
कहे टेऊँ जिसके किये,
होवे भव दुख भंग ।।

29 अप्रैल (गुरूवार) से 3 मई (सोमवार) 2004 तक

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातनधर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ मेला १५ अप्रैल (गुरूवार) से ४ मई (मंगलवार) २००४ तक श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा । इस बीच जयपुर का चैत्र मेला भी उज्जैन में २९ अप्रैल से ३ मई २००४ तक मनाया जायेगा। आप सब इस महाकुम्भ पर्व में आकर स्नान, सत्संग, सेवा करके मानव जीवन को कृतार्थ करें।

प्रेम प्रकाशी

कार्यक्रम

प्रेम प्रकाशी

प्रतिदिन कार्यक्रम

प्रातः ७ से ११ व सायं ४ से ८ बजे तक सत्संग एवं प्रातः-सायं भण्डारा होगा

मुख्य स्नान तिथि

१९.०४.२००४ सोमवार	सोमवती अमावस्या मुख्य स्नान
२२.०४.२००४ गुरूवार	अक्षय तृतीया मुख्य स्नान
२४.०४.२००४ शनिवार	वैशाख शुक्ल पंचमी मुख्य स्नान
०४.०५.२००४ मंगलवार	वैशाखी पूर्णिमा शाही स्नान

छावनी व चैत्र मेला कार्यक्रम

१५.०४.२००४ गुरूवार	प्रातः श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र आरंभ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व ध्वजावंदन
२८.०४.२००४ बुधवार	स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की ३९वीं पुण्यतिथि
२९.०४.२००४ गुरूवार	चैत्र मेले के निमित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व सत्संग
०३.०५.२००४ सोमवार	प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग
०३.०५.२००४ सोमवार	सायंकाल पल्लव पाकर उत्सव का समापन

सेवा में:
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड,
जयपुर फोन: ०१४१-२३७२४२३,२४

नोट:
१. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च एवं गिलास जरूर लावें ।
२. सोना-गहना व कीमती सामान साथ न लावें ।
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें ।

पताः
श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी)
जंतर-मंतर रोड, लाल पुल के पास, उज्जैन
मो. ९४२५०-५३९८२, ९८२९०-१४८५०

ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र
अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका
वर्ष 24 प्रेम प्रकाश संदेश अंक 4

मंगल आशीष

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज

संरक्षण, मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

भारत में
एक वर्ष के लिए 50 रूपए
तीन वर्ष के लिए 140 रूपए
विदेश में
एक वर्ष के लिए 350 रूपए
तीन वर्ष के लिए 1000 रूपए

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें शीघ्र ही मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए।

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र-व्यवहार के लिए पता :-
व्यवस्थापक: प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर ग्वालियर - 474001
फोन नं.- 0751-2454183, 2327427

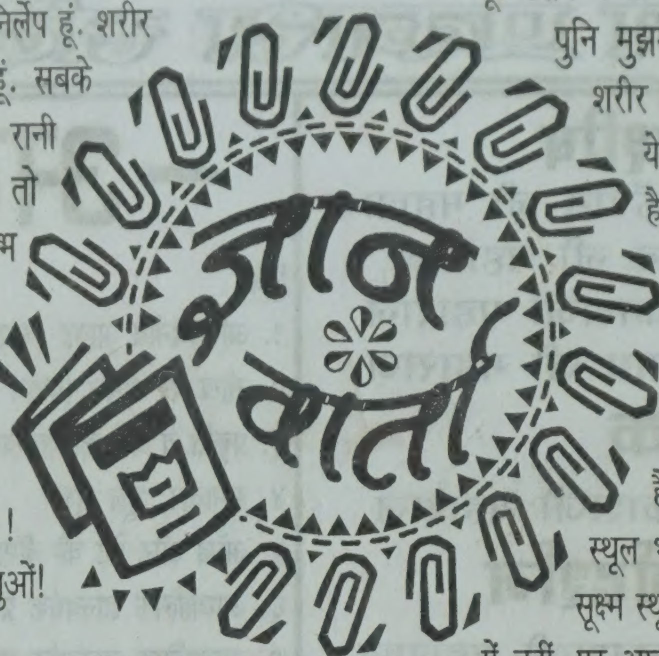
-अनुक्रम-

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति शनिवार व रविवार प्रातः ८ से १२ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए शुल्क जमा किया जा सकता है

कथा चूड़ाला शिखरध्वज-३२

अनिर्वचनीय आत्मा

जब इस जीव को अपने स्वरूप का ज्ञान होता है तब शरीर का भान रहता ही नहीं ऐसा लगता ही नहीं कि मैं शरीर हूं. ऐसा लगता है कि मैं रहने वाला हूं बस. और इस शरीर से मैं निर्लेप हूं. शरीर मुझमें नहीं परन्तु मैं सबके अंदर व्यापक हूं. सबके अंदर वो ही ज्योति नजर आती है उसको. रानी की वृति भी अपने आत्मतत्व में लगी हुई है. तो रानी अपने आपको जानत भई अभेद, नभ ज्यूं मैं निर्लेप हूं अक्रिय अचल ऐसा रानी के मन में भाव उत्पन्न हो रहा है कि मैं कैसे हूं! मेरा स्वरूप कैसा है ? इतना कथा का प्रसंग पहले हो के आया है. आज के प्रसंग मे याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं- हे रामजी ! सतूगुरू महाराज जी कहते हैं- हे जिज्ञासुओं! मुमुक्षुओं ! रानी क्या सोच रही है



द्वैत शब्द कछु मुझमें नाहीं, जन्म नहीं ना मरना है.
मन इंद्रियों से क्रिया होती,मुझमें ना कछु करना है.
जीव ईश पुनि मुझमें नाहीं, सूक्ष्म नाहिं स्थूला है.
सुखःदुख का है लेश न मुझमें, उल्टा नहिं अनुकूला है.
राग-द्वेष कछु मुझमें नाहीं, हार नहीं ना जीता है.
अज्ञ तज्ञ भी मुझमें नाहीं, ना को वैरी मीता है.

रानी अपने आपको निर्लेप मानते हुए कहती है,द्वेत शब्द कछु मुझमें नाहीं, मुझमें द्वेत नहीं है पहले ही विश्लेषण हो चुका है कि आत्मा अद्वैत है अर्थात् जहाँ दो नहीं वहीं मेरा स्वरूप है ऐसा रानी विचार करती है. जन्म नहीं ना मरना है, और जन्म-मरण से मैं रहित हूँ.

तेरा तो घर है अविनाशी,जन्म-मरण का दुःख न जाई.

वो जो आत्म तत्व है उसमे ना ही जन्म है,न मरण है,जन्म-मरण दोनों से परे वो आत्मतत्व है. अजर-अमर है वो तत्व. मन इंद्रियो से क्रिया होती ये क्रिया तो इन्द्रियां कर रही हैं. मन के द्वारा, मन से फुरना संकल्प उठता है, इन्द्रियां उसी कार्य में लग जाती हैं. जैसे मन कहता है- चलो कहीं घूम के आते हैं तो पैर चलना शुरू कर देते हैं, देखने का मन होता है तो आंखे देखना शुरू कर देती है, मन जिस इन्द्रिय के साथ होता है, उस इंद्रिय में क्रिया होना शुरू हो जाती है. तो मन और इंद्रियों से ये क्रिया होती है, मुझमें ना कुछ करना है करना इस आत्मा में नहीं है. आत्मा क्रिया से रहित है इसलिए इसे अक्रिय भी कहा जाता है.

जीव ईश पुन मुझमें नाहिं जीवपना और ईशपना दोनों ही मुझमें नहीं है, ये तो माया और अविद्या का खेल है. माया का खेल ईश्वर है और अविद्या का खेल है जीव. ये माया से अविद्यारहित जो शुद्ध ब्रह्म है वह मैं हूँ. उसमें न तो जीवपना है और न ही ईशपना है. जीव ईश पुनि मुझमें नाहीं, सूक्ष्म नहिं स्थूला है. ये जो तीनों शरीर स्थूल कारण और सूक्ष्म ये मुझमें नहीं है और ये जो सारी सृष्टि सूक्ष्म और स्थूल नजर आ रही है, कहीं पर स्थूल है, कहीं पर सूक्ष्म है. स्थूल से स्थूल है पहाड़,और अन्य सब चीजें जो नजर आती हैं. सूक्ष्म से सूक्ष्म ऐसे भी जीव-जन्तु हैं जो माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं, खुली आंखो से नहीं देखे जा सकते. वो सूक्ष्म प्रकृति है. सूक्ष्म प्रकृति वो भी मेरे अंदर में नहीं है और स्थूल भी मेरे अंदर नहीं है. मैं इन सबसे न्यारा हूं. सूक्ष्म स्थूल दोनों से ऊपर मैं हूं और तीनो शरीर आत्मा में नहीं, पर आत्मा सत्ता से ही वो चल रहे हैं.

आनंदस्वरूप आत्मा

सुख दुख का है लेश न मुझमें सुख और दुख जो हमें भासता है वो भी मुझमें नहीं है. मुझे ना सुख ना ही दुख दोनों ही स्पर्श नहीं कर सकते. निर्लेप है आत्मा, सुख दुख से लिप्त नहीं हो सकती आत्मा. ये जीव सच्चिदानंद स्वरूप है. गुरू महाराज जी का वचन है ये जीव आनंदस्वरूप है इसमें दुख का लेश है ही नहीं. दुख अगर नहीं है तो सुख भी नहीं है. ये जीव आनंदस्वरूप है अर्थात् सुख दुख दोनों से ऊपर है. सुख का उल्टा दुख, दुख का उल्टा सुख होता है. आनंद का उल्टा शब्द आज तक किसी को समझ नहीं आया. उल्टा है नहीं क्योकि वो एक ही है आनंद कहो, परमानंद कहो अर्थात् आनंदस्वरूप, परमानंद स्वरूप वो आत्मा है; उसमें सुख दुख का रति मात्र भी नहीं है. उल्टा नहीं अनुकूला है प्रतिकूल और अनुकूल परिस्थिति, प्रतिकूल और अनुकूल पदार्थ, प्रतिकूल और अनुकूल व्यक्ति ये सब चीज मुझमें नहीं है.

गुरू महाराज जी का भजन है-देखो नैना खोलके तुम अद्‌भुत् ही इसरारा है तुम अपने नैना खोलकर के देखो, सारी उल्टी सीधी अर्थात् अद्‌भुत् ही बातें हैं. छोटा लंबा सीधा टेढ़ा न हल्का न भारा है, देखो नैना खोलके तुम अद्‌भुत ही इसरारा है विचार तो करो कैसे रंग-रूप नहीं है, छोटा बड़ा नहीं है, लंबा और ठिगना नहीं है, गोरा काला नहीं है,

अंग और आकार से रहित है, रूप से रहित है. देखो नैना खोलके वो ज्ञान के नैन खोलकर देखो; कैसा रूप है आपका? विचार करो अच्छी तरह विचार करो. कैसा है यह बड़ी अजीब बात लगती है. न अनुकूल है, न प्रतिकूल है, न दुख है, न सुख है. न जन्मना है, न मरना है, जीव-ईश, राग-द्वेष ये सब जो द्वैत है ये मुझमें नहीं.

आत्मा:राग-द्वेष से रहित

रानी ने शुरूआत में जो द्वैत शब्द कहा है उस द्वैत में जिन-जिन बातों का समावेश होता है उसके बारे में बताते हुए रानी कहती है राग-द्वेष कुछ मुझमें नाहीं हार नहीं ना जीता है न राग-द्वेष है न हार-जीत है. देखो आत्मतत्व जो है, परमात्व तत्व जो है, वो राग द्वेष से रहित है. अर्थात् उसमें न तो राग है और न ही द्वेष है.

भगवान के लिए भी ऐसे ही कहा जाता है कि उसमें राग-द्वेष नहीं है.न किसी के साथ उसका राग है न किसी के साथ उसका द्वेष है वो तो कर्मोंके अनुसार जैसा जिस जीव का कर्म है वैसा ही उसको फल मिलता है.

देखने में ऐसा लगता है कि भक्तों के साथ उसका राग है और दुष्टों के साथ उसका द्वेष है परन्तु भगवान न दुष्ट देखता है न भक्त देखता है जो जिस भाव से कर्म करता है उसके अनुसार उसे फल की प्राप्ति होती है. भगवान के हाथों से कई दुष्ट भी मारे गये है परन्तु उन दुष्टों को भी सद्गति मिलती है, भगवान के हाथ से कोई मरता है, या भगवान के दर्शन करके मरता है तो उसे सद्गति ही मिलती है.

कोई कितने भी पाप कर्म कर ले अंतकाल में भगवान का नाम-सिमरन हुआ. अंतकाल में भगवान के सामने है या भगवान के हाथों में उसकी गति हुई है तो भगवान उसे अपने स्वरूप में लीन कर देते हैं. उसके साथ में द्वेष नहीं करते कि इसने सारी उम्र दुश्मनी की. वास्तव में राग-द्वेष ये तो मन के कारण से हैं, मन में फुरना उठता है संकल्प विकल्प होते हैं तो उनमें भ्रमित होकर मनुष्य राग-द्वेष करता रहता है. अगर मन ही नहीं अर्थात् आत्मतत्त्व में स्थिति हो गई तो फिर कोई राग-द्वेष नहीं.

हार नहीं ना जीता है आत्मा न तो हारती है और न ही इसकी जीत है. ये तो बाह्य संसार में मन के कारण प्रतिद्वदंता रखकर हम हार या जीत मानते हैं परन्तु आत्मा में कोई हार जीत नहीं, आत्मतत्व इनसे निर्लेप है अर्थात् न तो उसे जीत हर्षित कर सकती है न ही हार उसे विषाद से भर सकती है.

अज्ञ-तज्ञ कछु मुझमें नाहिं अज्ञ माने अज्ञानी, तज्ञ ज्ञानी अर्थात् न तो मैं अज्ञानी हूं और न ही मैं ज्ञानी हूं. मैं ज्ञान अज्ञान दोनों से ऊपर हूं. न वैरी को मीता है जब राग-द्वेष नहीं, जब जन्म-मरण नहीं, जब जीव-ईशपने का भेद ही मुझमें नहीं, तो फिर कौन मेरा वैरी कौन मेरा मित्र, जब मेरे अंतर में कोई भेद-बुद्धि नहीं तो न ही कोई मुझे मित्र भासता है और जब ये सारा संसार मेरा ही रूप है तो मैं किससे बैर करूं किससे मित्रता रखूं. रानी गहराई से विचार करती जा रही है तो उसका विवेक जागृत हो रहा है. ऐसा विचार करके रानी पुनः सोचने लगी-

बीते दिन का करन लगी रानी पश्चाताप.
इतने दिन भूली रही आत्म से मैं आप..
अब अपने अंदर स्थित हूं मैं, कभी न भव को पांऊ.
यह जग सारा चल जावे पर, मैं न कब चल जांऊ..
जैसे सागर लहर तरंगा, भिन्न नहीं स्वरूपा है.
तैसे जीव चराचर सारे, मेरा आत्मरूपा है..
ऐसा मन में जान चूड़ाला, ब्रह्म समाधि लगाय रही.
आतम अन्तर स्थित होकर, परमानंद को पाय रही..

जब व्यक्ति अपने आप जानता है. जब भगवान की शरण में आता है, जब कोई निष्काम कर्म करना शुरू कर देता है, यानि किसी भी रूप में उस तत्व से जुड़ता है; कर्म से, उपासना से या ज्ञान से, तब उसको बड़ा अचरज होता है, बड़ा आश्चर्य होता है कि मेरे जीवन के इतने दिन अज्ञान में कैसे बीत गये, कितने दिन मैंने कुभ कर्मों में बिता दिये. कितने दिन मेरे भगवान की प्रीति के बिना यूं ही गूजर गये. अपने आप का अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किये बिना कैसे मैंने इतने दिन गुजार दिये. संसार के सारे ज्ञान प्राप्त करने का मैंने प्रयास किया परन्तु अपनी प्राप्ति के लिए कुछ नहीं किया. ऐसा पश्चाताप जब व्यक्ति के मन में होता है तो उसके अंतःकरण को निर्मल बना देता है, उसके अंतःकरण को शुद्ध कर देता है.

रानी को भी मन में पश्चाताप हो रहा है कि मेरी बहुत उम्र बीत गई; इतनी उम्र सुख-दुःख भोगती रही परन्तु अपने आप को जाना; कैसे मेरी उम्र गुजर गई, पता ही नहीं चला. ऐसा पश्चाताप, ऐसा विचार भी किसी विरले के मन में आता है. कई तो ऐसे होते हैं जिनका सारा जनम चला जाता है, उस तत्व की प्राप्ति का विचार ही मन में नहीं आता. इस तत्व की प्राप्ति सबको नहीं होती. जो पुरूषार्थ करता है, जिसको उस तत्व प्राप्ति की इच्छा है उसे उस तत्व की प्राप्ति हो जाती है.

श्वास का मोल

गुरू महाराज जी फरमाते थे कि एक किसान था, वह अपने खेत के लिए नदी के किनारे मिट्टी लेने गया, वहां उसको हीरे लाल जवाहरात मिले. उसने वो सारे लाल पक्षियों को उड़ाने में फेंक दिये. उसकी पत्नी आई दिन में उसे खाना देने तो उसने कुछ लाल अपने बच्चे को खेलने के लिए दिए. वह स्त्री बच्चे को लेकर घर जा रही थी तो रास्ते में उसे जौहरी मिला

उसने उसे उन दो लालों के बदले महल व धन का ढेर दिया. जब वो किसान घर पहुंचा तो पत्नी के द्वारा ये पता चलने पर दो लाल से इतना धन मिला है तो सुनकर वो पश्चाताप करने लगा कि हाय! मैंने इतने लाल यूं ही फेंक दिये.

गुरू महाराज जी कथा का सार सुनाते हुए कहते थे कि भगवान ने हमें सांसो रूपी अमूल्य लाल दिये है और हम उनको यूं ही संसार के कार्यों में व्यर्थ गवां रहे हैं जब कोई गुरू या संत हमारे को मिलता है जब वह हमें श्वासों का मोल, स्वासों की महत्वता समझाता है तो ये जीव पश्चाताप करता है कि मैंने कितने ही लाल यूं फेंक दीए अगर मैं इन स्वासों का सदुपयोग कर लेता तो कितनी अपार संपदा का मैं मालिक बन जाता. रानी को भी पश्चाताप होता है कि **इतने दिन भूली रही आत्म से मैं** आप इतनी उम्र में आत्मा से दूर कैसे रही. बड़ी अजीब बात है जब व्यक्ति उस तत्व को प्राप्त कर लेता है तो उसको बड़ा आश्चर्य होता है कि इतने दिन हम अपने आपको क्यों भूले रहे. इतने महान सुख इतने गहरे आनंद से हम क्यों दूर रहे. अपने आप में स्थित होकर अपना ही तो आनंद लेना था उस आनंद को भी मैंने प्राप्त नहीं किया ऐसा कैसे हुआ.

रानी भी ऐसे विचार करने के पश्चात् कहती है कि **अब अपने अंदर स्थित हूं मैं कभी न भव को पाऊंगी** कभी इस संसार में नहीं जाऊंगी. भव-सागर के चक्कर में अब मैं पडूंगी ही नहीं. अब मैंने अपने आप को जान लिया, अपने आप में स्थित हूं मैं, इस भव-सागर से मैं अब दूर हूं! **यह जग सारा चल जावे पर मैं न कभी चल जाऊंगी.**

अहं अविनाशी की दृढ़ता

मैं कहीं भी जाने वाली नहीं, मैं अक्रिय हूं, अचल हूं. इस सारे जग का नाश हो जावे, परन्तु मेरा नाश होने वाला नहीं. यह निरन्तर चलने वाला जगत है, यह चलता ही रहता है परन्तु मैं इस जग में सदैव एक-रस रहती हूं ऐसा नहीं है कि मेरा शरीर नहीं जाएगा ये तो जाता रहेगा. शरीर का तो नियम है जो पैदा होगा, वो मरेगा ही, उसका तो नाश होना निश्चित है पर ये आत्मतत्व पहले भी था, अभी भी है, आगे भी रहेगा. ये आत्मतत्व कहीं आता जाता नहीं वह तो सर्वकाल में व्यापक है.

जैसे सागर लहर तरंगा, भिन्न नहीं स्वरूपा है जैसे सागर में लहरे उठती हैं, तरंगे उठती है, बुलबुले उठते हैं, भंवर उठती है वह और कुछ नहीं पानी ही है, सागर ही है. सागर और लहर दिखने में अलग-अलग आती हैं. लहर को भी अगर मस्तिष्क हो जाए तो वह भी कहने लगे कि कहां सागर, कहां मैं. सागर गहरा मैं उथली-उथली. मैं तो चलती हूं पर सागर स्थिर नजर आता है. मैं तो ऊपर उठती हूं चलती हूं लय होती हूं पर क्या वे अलग हैं? नहीं.

ऐसे ही ये जीव सोचता है कि कहां मैं, कहां परमात्मा? मैं तो जन्मता मरता हूं आत्मा तो स्थिर है मैं तो चलने वाला हूं परन्तु जब आत्म विचार होता है तो फिर ऐसा विचार नहीं आता फिर तो ऐसा लगता है कि जैसे ये लहर तरंगे सब एक रूप हैं वैसे ही मेरा स्वरूप परमात्मा का स्वरूप है. अलग नहीं है हम. **एको रूप हमारा.**

रानी सोचती है ये जो सारे जीव हैं, लहर तरंग की भांति हैं. ये तो क्या पर जब व्यक्ति उस तत्व को प्राप्त कर लेता है तो उसके मुख से ऐसे भी व्यक्तव्य निकल पड़ते है-जैसा कि विचार सागर में भी आता है-

अब्धि अपार स्वरूप मम, लहरी विष्णु महेस.
विधि रवि चंदा वरून यम, सक्ति धनेस गनेस..

मेरा जो स्वरूप है वो सागर के सम है. मैं पानी से लबालब भरा गहरा सागर हूं उसमें लहरियां उठती हैं. ये विष्णु, शंकर, ब्रह्मा,सूर्य,चन्द्रमा,शक्ति (मां के स्वरूप) कुबेर, गणेश, ये सभी मेरी लहरीयां हैं, आत्मतत्व की प्राप्ति के बाद व्यक्ति का ऐसा उद्घोष निकलता है. वही रानी कहती है कि मैं आत्म-स्वरूप हूं.

ऐसा मन में जान-चूड़ाला, ब्रह्म समाधि लगाय रही.
आतम अंतर स्थित होकर, परमानंद को पाय रही..

रानी अपने आत्म-स्वरूप में स्थित होकर ब्रह्म-समाधि लगाने लगी. अपने आप को इस शरीर से अलग करके उस परमानंद के अनन्त सागर में डुबकी लगाते हुऐ अपने आत्मपद में स्थिर होकर अपने आप को अभेद मानकर आनंदित हो रही है. गुरू महाराज हम पर भी ऐसी कृपा करें जो हम भी उस आनंद को प्राप्त कर अपने आप में स्थित हों आगे गुरू महाराज जी जिस प्रकार आगे बताऐगें हम श्री श्रवण करेगें.

सीख पर अमल

मेरा ढ़ाई वर्षीय बेटा बहुत शरारती है एक दिन उसने बहन की किताब के पन्ने फाड़ दिये तो उसने थप्पड़ मार दिया. इस पर मैंने उसे समझाते हुए कहा कल्याणी छोटे बच्चे भगवान का रूप होते है, उन्हें ऐसे मारना नहीं चाहिए नहीं तो भगवान नाराज हो जाते हैं. थोड़ी देर बाद ही बेटे ने फिल्टर का नल चालू कर दिया, तो गुस्से में मेंने उस पर हाथ उठा दिया. मेरी बेटी जो यह सब देख रही थी, मेरे समीप आकर बड़ी मासूमियत से बोली, मम्मी अभी तो आपने कहा था कि बच्चों को मारना नहीं चाहिये, भगवान नाराज होते हैं, तो आपने ऐसा क्यों किया? उस छोटी-सी बेटी ने मुझे यह प्रेरणा दी कि जो सीख हम बच्चों को देते हैं, उस पर पहले खुद अमल करना चाहिए, जो अक्सर हम भूल जाते है.

राधिका, जबलपुर

पर्व मांगल्य

प्रकृति व धर्म का समन्वय चेटी चण्ड

आज से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व सिन्ध की राजधानी ठठ्ठा में नवाब मरखशाह का शासन था. साम्प्रदायिक तत्वों के उकसाने पर नवाब गैर मुस्लिम जाति के ऊपर जुल्म ढाने लगा. उन्हे धर्म परिवर्तन कर इस्लाम मजहब अपनाने के लिए विवश करने लगा. सिन्ध के हिन्दु जो वैदिक काल से ही जलपति वरूण देव की आराधना करते आते थे, उन्होने उसी की शरण ली और सिन्धु नदी के पावन तट पर अपने इष्ट देवता की पूजा अर्चना में एकत्रित हो गये. लगातार सात दिन तक अखण्ड आराधना के बाद जल के मध्य से जलवाणी हुई कि स्वयं भगवान उनकी रक्षार्थ नसरपुर सिन्ध में ठाकुर रतनरॉय के घर माता देवकी की कोख से मनुष्य रूप में अवतार धारण करेंगे!

विक्रम संवत् १००७ शुक्लपक्षीय चैत्र चंद्र तिथि (चेटी चंड) शुक्रवार के दिन वरूण देव के रूप में उदयचन्द्र ने अवतार लिया. उन्होने अपनी देवी शक्ति से नवाब मरखशाह को प्रभावित कर पराजित किया. नवाब मरखशाह ने अपने दुर्व्यवहार के लिये उदयचन्द्र से क्षमा याचना की और उनके शरण में आया. तत्पश्चात् वरूण अवतार उदयचन्द्र ने नवाब को उपदेश दिया कि जैसे संसार बनाने वाले ने हर धर्म के मानने वाले को जल,वायु व प्रकाश के उपयोग का समान अधिकार दिया है, उसी प्रकार तुम भी सभी को समदृष्टि से देखो. नवाब सहित मुस्लिम संप्रदाय ने उन्हे अपना इष्ट मानकर उसे जिन्दापीर या ख्वाजा रिबज्र के नाम से पूजा. आज जल व ज्योति स्वरूप उदयचन्द्र अर्थात् उडे़रोलाल को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है, यथा-अमरलाल, झूलेलाल, लाल सांई इत्यादि. उनका जन्म दिवस चेटी चंड सिन्ध हिन्द तो क्या विदेशों में भी सिन्धी दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है.

पूजन विधि:- करीब दो फिट लकडी के विमान में ज्योति प्रज्जवलित की जाती है जिसे सिन्धी में बहराणा कहा जाता है. ज्योति प्रज्जवलित करने के पूर्व पूजा सामग्री के साथ बहराणा की अर्चना की जाती है. उसे गुलाल, अगरबत्ती, चंदन, कुंगु, कपूर, पानपत्ते, पंचमेवा, नारियल, मिश्री, चावल, गेहूं व ज्वार के आटे के मोदकों इत्यादि से सुशोभित किया जाता है. झूलेलाल के स्तुतिगान पंजड़े, पल्लव (पल्लव फैलाकर अर्चना) व पंचक गाये जाते है, भजन किया जाता है, शहनाई की धुन तथा ढोलक के ताल पर समस्त भक्त डोकलों को हाथ में लेकर गोलाकार नाचते हुए सिन्धी लोकनृत्य (छेज) का प्रदर्शन करते हैं. आयोलाल झूलेलाल के गगन भेदी नारो से आकाश गूंज उठता है. सेसा सुखी रूपी प्रसाद पके हुए चने एवं मीठा जल वितरण पश्चात् बहराणा व झूलेलाल की झांकी का जुलूस नगर की परिक्रमा करता है और मुख्य चौराहों पर सिन्धी लोकनृत्य "छेज" का प्रदर्शन किया जाता है. रात्रि की पूर्व बेला में बहराणा की ज्योति व खाद्य सामग्री को जल में विसर्जित किया जाता है, ताकि जल में विचरने वाले जीव जन्तुओ को जीने का सहारा एवं प्रिय आहार प्राप्त हो सके. रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमो द्वारा मनोरंजन किया जाता है.

जल व ज्योति की पूजा:- 'बहराणा' जल व ज्योति की पूजा का प्रतीक माना जाता है 'बहर' माने पानी-समुन्द्र, बहरू देवता माने जल देवता-वरूण देव. जल व ज्योति का संबंध प्राकृतिक है. जो अनादि काल से चला आ रहा है. चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति समुन्द्र की लहरों को अपनी ओर खींचते हुए समुन्द्र में ज्वारभाटा ला देता है. सिन्धी समाज का प्राचीन इतिहास साक्षी है कि सिन्धी वर्की सौदागर (समुन्द्र पार व्यापार करने वाले) सदियों से दूर देशो को व्यापार हेतु जाया करते थे और उनकी पत्नियां अपने पतियों के सुरक्षित सफर हेतु नदी, तालाब या समुन्द्र के किनारे पानी की पूजा करते हुए विनती करती थी. यही कारण है कि आज भी संध्याकाल में जलाशय या नल पर अक्षत-शक्कर समर्पित कर पल्लव की प्रथा सिन्धी औरतों में प्रचलित है. उस पूजा को सिन्धी में संज्ञा दी गई है,'अखो' अर्थात् (अक्षत पूजा). वैसे भी सिन्धी समाज ने अपने रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान पद्धति में प्रकृतिं के घर प्रणाली एवं विश्व कल्याण के हित को ध्यान में रखा हुआ है. भोजन पकाने के समय प्रथम रोटी गाय के लिएं सुरक्षित हो जाती है. मनुष्य भोजन ग्रहण करने के पूर्व भोजन का कुछ अंश कुत्ते एवं पक्षियों के लिए अलग निकाल देता है. किसी भी पूजा के समापन पर पल्लव से प्रभु को सर्वजीवों के हित की प्रार्थना की जाती है. पानी की पूजा में आज से ढाई सौ वर्ष पूर्व सिन्धी के ओजस्वी कवि शाह अब्दुल लतीफ ने अपने काव्य के सुर सामुण्डी (समुन्द्र) में पंक्तिबद्ध किया है:-उभ्यूं तउ पूजीनि, वहूं वण्जारनि जू. आण्यो अक्खा डियन, खथूरी समुंड खे. अर्थात् व्यापारियों की औरतें समुन्द्र किनारे आकर पूजा करती हैं, समुन्द्र को अक्षत भेंट करती हैं. आज भी सिन्धी समाज इस युग तिजारती चरित्र को देश विदेश में अपनाए हुए है. इसी प्रकार समुन्द्र को जल का प्रति रूप मानकर पूजा जाता है और ज्योति स्वरूप चन्द्रमा की भी अर्चना की जाती है. ताकि वह अपनी आकर्षण शक्ति से सौदागरों के सफर के समय समुन्द्र में ज्वारभाटा न लाकर, उनके जहाजों को सुरक्षित रखे. चन्द्रमा की महत्वता इतनी है कि व्रत की समाप्ति चन्द्रदर्शन व उसे अर्ध्य (जलदान) देने के पश्चात् होती है. विज्ञान अर्थ एवं धर्म का कैसा न सुन्दर

त्रिवेणी संगम है.

चंदा की चांदनी शीतल व लुभावनी होती है. हर माह के कृष्णपक्षीय अमावस्या के पश्चात् शुक्लपक्षीय दर्शनीय पर्व या दूज के प्रथम वार चन्द्रमा दिवस को माह का बड़ा दिन मानकर पूजा जाता है, उसका दर्शन शुभ माना जाता है. अमावस्या के अंधकार के पश्चात् चन्द्रमा रात्रि के तम को हरने के लिए कटिबद्ध हो जाता है. जो उत्तरोत्तर उजाले में भी वृद्धि करता हुआ पूर्णमासी को प्रकृति पर सफेद सी चादर बिछाकर रात्रि को सुहावना बना देता है. उस पूर्णमासी को ही सिन्धी समाज सत्यनारायण के नाम से संबोधित करते हुए व्रत धारण करता है."तमसो मा ज्योतिर्गमय" शत प्रतिशत सही प्रमाणित हो जाता है.

जल और ज्योति की महत्ता सिन्धीयों के अतिरिक्त प्रायः हर धर्म. महजब मानता है. हिन्दू धर्मा५लंबी हवन-यज्ञ पूजन आदि का श्री गणेश पानी के छींटे से शुद्धिकरण पश्चात् करते हैं. पानी अशुद्ध को शुद्ध बनाने का प्रताप रखता है, यह धार्मिक मान्यता है. कोई मंगलकार्य के समय पकी हुई खाद्यसामग्री में यदि किसी की बुरी नजर भी लगी हो तो उसे शुद्धता प्रदान करे. पाठ पूजा पश्चात् ज्योति प्रज्जवलित कर आरती की जाती है और जल रूपी चरणामृत ग्रहण किया जाता है. मनुष्य के मरते समय उसके सिरहाने दीपक जलाकर रखा जाता है और उस ज्योति स्वरूप दीपक की लौ से ही श्मशान भूमि में प्राणी का दाह-संस्कार किया जाता है. जल भी प्राणी के साथ लेकर श्मशान घाट के द्वार पर अर्थी के चौकोर इर्द-गिर्द मटकी से छिड़का जाता है. प्राणी की पगड़ी-तीजे की रस्म भी सूर्यास्त के पूर्व अर्थात् उजाले में की जाती है और अंत में उपस्थित जन समुदाय पर पानी का छींटा देकर अस्पृश्यता खत्म कर शुद्ध बनाया जाता है. व्यवसायी के दुकान पर पानी छिड़क कर उसे सूतक से निवृत किया जाता है.

विविध दृष्टिकोणः- आर्थिक दृष्टि से भी चेटी चंड का महत्व है.चैत्र मास में खेती तैयार हो जाती है, और कटाई शुरू हो जाती है. खेत खलियानों में अनाज के ढेर खड़े हो जाते हैं. सृष्टि का हर प्राणी, काश्तकार, दुकानदार, पशुपक्षी सभी प्रसन्न दिखाई देते हैं क्योंकि प्रत्येक को स्वादिष्ट खाद्य सामग्री सुलभ हो जाती है. मौसम के अनुकूल बसन्त बहार में सारा दिन काम करो तो भी थकान नहीं होती. हर उद्योग धंधे का कामगार अच्छा उत्पादन दिखा कर देश का मस्तक ऊंचा कर देता है. यही कारण है कि विश्व के कई देशों का आर्थिक वर्ष पहली अप्रैल से प्रारम्भ होता है. वे फस्ट अप्रेल फूल मनाकर नूतन वर्ष के स्वागत में खुशियां मनाते हैं. हम भारतीयों के लिए यह प्रसन्नता की बात है वीर विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारी शासको को हिन्द से खदेड़ दिया था. विक्रमी संवत के नूतन वर्ष का शुभारम्भ चेटी चंड के दिन से ही होता है. गुड़ीपड़वा का पावन पर्व भी इसी दिन को मनाया जाता है. भारत ही नहीं अपितु विश्व में सिन्धी लोग इसे सिन्धी दिवस के रूप में मनाते हैं.

हीरालाल भूरानी, खैरथल

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में १२६ आपरेशन

जयपुर. १३ फरवरी- आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की अपार कृपा से श्री अमरापुर स्थान पर लगे ४ दिवसीय निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में १०७६ रोगियों की जांच की गयी उन्हे निःशुल्क दवाईयां वितरित की गयी.१४ फरवरी को १२६ मोतियाबिन्द के सफल आपरेशन किये जाकर लेन्स प्रत्यारोपित किये गये, इन मरीजों को निःशुल्क दवाईयां व चश्में भी वितरित किए गये. शिविर में भर्ती रोगियों के आवास भोजन की व्यवस्था अमरापुर स्थान में ही की गई थी. चिकित्सा विभाग के डा.रमेश वाधवानी, डा.एस.नायर, डा.इकबाल भारती व डा. विश्वास गुप्ता व नर्सिंग स्टाफ ने श्री अमरापुर धाम पर ही बनाये गये आपरेशन-थियेटर में आपरेशन किए. श्री प्रेम प्रकाश सेवामण्डली, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, महिला सेवा मण्डली के कार्यकर्ताओं ने संत मोनूरामजी के नेतृत्व में सेवा कार्यो को पूरा किया.

स्वामी टेऊँराम पोली क्लिनिक जयपुर में चिकित्सा शिविर सम्पन्न

जयपुर- अग्रवाल फार्म स्थित स्वामी टेऊँराम पोली क्लिनिक में विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें विविध बीमारियों से संबंधित ३५० रोगियों की जाँच डा.एस.एल.तोलानी, डा.प्रकाश चांदवानी डा.प्रकाश केसवानी ने की.

श्री राम नवमी महोत्सव

एटा (उ.प्र.) के विख्यात श्री राम दरबार में सन्त धन्नी फकीर के सानिध्य में श्री राम नवमी महोत्सव बड़े ही धूम धाम से मनाया जायेगा, ३० मार्च रामनवमी से ५ अप्रेल हनुमान जयंती तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन इस अवसर पर रहेगा.

आगरा के श्री सन्त आश्रम साधु बेला काला महल में भी २६ से ३० मार्च तक सन्त कृष्णप्रसाद जी द्वारा श्री रामनवमी उत्सव पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है.

भूल सुधार

फरवरी २००४ के अंक में प्रकाशित मेला मिलाप का महापर्व होली के लेखक का नाम श्री कन्हैयालाल अगनानी जी के स्थान पर श्री कन्हैयालाल देवनानी जी छप गया था उसके लिये हमें खेद है

चिंतन

आँख और पेटकी बीमारी

सभी मनुष्यों में दो तरह की बीमारी है- आँख की बीमारी और पेट की बीमारी. आँख की बीमारी क्या है?-

इसी दुनिया में अँधेरा, सबकी आँख में जो छाया.
जिसके कारण सूझ पड़े नहीं, कौन हूँ मैं कहाँ से आया.
कौन दिशा को जाना मुझको, किसको देख मैं ललचाया.
कौन है मालिक इस दुनिया का, किसने रची है यह माया.

और पेट की बीमारी क्या है?-

इस दुनिया में एक कूप है, जिसका पार कोई नहीं पावै.
जिसको भरने कारण प्राणी, देश दिगन्तर को जावै.
दीन भये पर घर में जाकर, सेवा कर कर मर जावै.
भजन ध्यान चिन्तन ईश्वर का, जिसके कारण बिसरावै.

इस विषय में एक कहानी है. एक वैद्य थे. उनके पास एक रोगी पहुंचा. उसने वैद्यसे कहा कि मेरी आँख में बड़ी पीड़ा हो रही है और पेट में भी पीड़ा हो रही है. वैद्य ने उसको लिटाकर उसका पेट देखा और आँख देखी. इतने में एक दूसरा रोगी आया. उसने भी कहा कि मेरी आँख में और पेट में बड़ी पीड़ा हो रही है. वैद्य ने विचार किया कि यह कैसी हवा चली है, सबको एक ही बीमारी! वैद्य ने दोनों रोगियों के लिये अलग-अलग दवा लिख दी और कहा कि कम्पाउण्डर से दवा ले लो. कम्पाउण्डर ने दोनों को दवा की दो-दो पुड़िया बनाकर दे दीं, एक आँख के लिये और एक पेट के लिये. वैद्य ने समझा दिया कि देखो, यह आँख में डालने की पुड़िया है. इसको रात में सोते समय आँख में डालना और बार-बार पलक झपकाना, जिससे आँख से गरम-गरम पानी निकल जायेगा. फिर सो जाना. इससे आँख ठीक हो जायेगी. यह दूसरी पुड़िया पेट के लिये है. इसको एक पाव जल में डालकर आग पर रख देना. जब जल एक छटाक रह जाय, तब वह काढ़ा छानकर पी लेना. इससे पेट ठीक हो जायेगा और दस्त लगने से आँख में भी लाभ होगा.

दोनों रोगी दवा लेकर चले गये. घर जाकर एक रोगी ने तो ठीक वैसा ही किया, जैसा वैद्य ने कहा था. आँख की दवा आँख में डाल दी और पेट की दवा पेट में. परन्तु दूसरे रोगी ने पुड़िया उलट दी! उसने पेट की दवा आँख में डाल दी और आँख की दवा पेट में डाल दी. आँख में थोड़ा-सा कचरा भी पड़ जाय तो पीड़ा होने लगती है, पर उसने पेट का चूर्ण आँख में डाल दिया! इससे आँख की पीड़ा बढ़ गयी! आँख की दवा ठण्डी होती है, वह पेट में चली गयी तो पेट की पीड़ा भी बढ़ गयी! अब वह वैद्य को गाली देने लगा कि तेरे बाप को मैंने मारा था क्या? वह तो अपनी मौत मरा था. फिर मेरे से किस दिन का बदला लिया है! दूसरे दिन वह दवाखाना खुलने से पहले ही वहां जा बैठा. वैद्यजी आये और दवाखाना खोलकर उससे पूछा-कहो, कैसे हो?

वह बोला-कैसे क्या हूं!

वैद्य ने कहा-अरे, क्या हुआ?

वह बोला-हुआ क्या, जो तुमने किया, वही हुआ!

वैद्य ने कहा-हमने क्या किया?

वह बोला-ऐसी दवा दे दी कि मेरी आँख की पीड़ा भी बढ़ गयी और पेट की पीड़ा भी बढ़ गयी! साफ कह देते कि मैं दवा नहीं देता! मेरे पास ज्यादा रूपया तो है नहीं, इसलिये उल्टी दवा दे दी.

वैद्य ने कहा-भाई, पीड़ा कैसे बढ़ गयी? किसी आदमी को दवा जल्दी असर करती है, किसी को नहीं करती, यह तो अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार होता है, पर पीड़ा बढ़ने का तो कोई कारण ही नहीं है!

वह बोला-मैं तो भुक्तभोगी हूं, मेरी पीड़ा तो बढ़ गयी! इतने में दूसरी रोगी आया. वैद्य ने उससे पूछा-कहो, तुम कैसे हो? वह बोला-महाराज, बहुत आराम है. एक-दो दस्त लगे, पेट भी ठीक है और आँखें भी ठीक हैं. यह सुनते ही पहला रोगी बोला-देखो, यह पैसेवाला आदमी है, इसको तो बढ़िया दवा दे दी, मेरे को घटिया दे दी! वैद्यने कहा-घटिया कैसे दे दी? जो दवा उसको दी, वही तुमको भी दी. तुम्हारी पुड़िया कैसी थी? रोगी ने जेब से चूर्ण की पुड़िया निकालकर वैद्य के सामने पटक दी और बोला-यह है वह पुड़िया. वैद्य ने कहा-दूसरी पुड़िया? वह बोला-दुसरी तो मैं काढ़ा बनाकर पी गया! यह पुड़िया आँख में डाली थी, दवा ज्यादा थी, इसलिये बच गयी. वैद्य ने कहा कि इसको निकालो यहांसे! उल्टी दवा तो यह खुद लेता है और कहता है कि तुमने मेरी पीड़ा बढ़ा दी!

इसी तरह हम सब लोग रोगी हैं. हमारी आँख की बीमारी क्या है? वास्तविक बात सूझती नहीं है. खुद तो जानते नहीं, दूसरे की मानते नहीं. जो अधूरा जानते हैं, उसी को पूरा मान लेते हैं कि बस, यही ठीक है. पेट की बीमारी क्या है? पेट कभी भरता ही नहीं! दरिद्र का भी पेट नहीं भरता और लखपति-करोड़पति का भी पेट नहीं भरता. कितना ही मिल जाय तो भी कहते हैं कि क्या करें, काम नहीं चलता. इन दोनों रोगों के लिये भगवान् ने हमें दो पुड़िया दी हैं- प्रारब्ध और पुरूषार्थ. आँख की बीमारी के लिये 'पुरूषार्थ' है और पेट की बीमारी के लिये 'प्रारब्ध' है. पुरूषार्थ करेंगे, सत्संग-स्वाध्याय, विवेक-विचार करेंगे तो आँखका रोग दूर होगा और अपने कर्तव्यका पालन करते हुए प्रारब्ध पर विश्वास करेंगे जो हमारे भाग्यमें लिखा है,वही मिलेगा तो पेटका रोग दूर होगा.

प्रारब्ध शोक-चिन्ता मिटाने के लिये है, आलसी-अर्कमण्य बनाने

के लिये नहीं. जैसे, बेटा बीमार हो तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसका भलीभाँति इलाज करते-करते अगर वह मर जाय तो मन में इस बात को लेकर चिन्ता, शोक, दुःख नहीं होगा कि हमने अपनी तरफ से उसके इलाज में कमी रखी. बेटा तो प्रारब्ध के अनुसार ही मरेगा, पर अपने पुरूषार्थ में कमी होगी तो चिन्ता, शोक, दुःख होगा कि हमने अपने कर्तव्य का ठीक पालन नहीं किया! इसलिये जो करने में सावधान और होने में प्रसन्न रहते हैं, उनकी आँख का रोग भी ठीक हो जाता है और पेट का रोग भी. परन्तु जो पुड़िया उलट देते हैं अर्थात् आँख के रोग के लिये प्रारब्ध और पेट के रोग के लिये पुरूषार्थ लगा देते हैं, उनके ये दोनों ही रोग बढ़ जाते हैं. ऐसे लोगों से सत्संग-स्वाध्याय, भजन-ध्यान करने के लिये कहा जाय तो वे कहते हैं कि कैसे करें महाराज! हमारे तो भाग्य में ही नहीं है. प्रारब्ध मिलने वाले धन के लिये रात-दिन पुरूषार्थ में लगे रहते हैं. सारा पुरूषार्थ पेट के लिये लगा देते हैं और आँख के लिये कुछ करते ही नहीं! भगवान् का नाम लेने के लिये कहो तो कहते हैं कि नाम कैसे लें, मुख में सौ मन का ताला लगा है! नाम लेना हमारे भाग्य में लिखा ही नहीं है! भगवान् की ऐसी ही मरजी है, हम क्या करें? हमारा क्या दोष है?

अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति का प्राप्त होना 'प्रारब्ध' के अधीन है और प्राप्त परिस्थिति का सदुपयोग करना 'पुरूषार्थ' के अधीन है. इसलिये कर्तव्य-पालन, सत्संग-स्वाध्याय, भजन-ध्यान आदि करने में तो मनुष्य स्वतन्त्र है, पर धन कमाने में स्वतंत्र नहीं है. मनुष्य यह नियम तो ले सकता है कि मैं रोजाना इतनी माला जप करूंगा, इतना स्वाध्याय करूंगा, पर यह नियम नहीं ले सकता मैं रोजाना इतने रूपये कमाऊंगा. कारण कि भजन-ध्यान आदि करना पुरूषार्थ के अधीन है और रूपये कमाना प्रारब्ध के अधीन है. परन्तु जहां पुरूषार्थ लगाना चाहिये , वहां प्रारब्ध लगा दिया और जहां प्रारब्ध लगाना चाहिये, वहां पुरूषार्थ लगा दिया इससे दोनों बीमारियां बढ़ गयीं. पेट की बीमारी बढ़ने से जीवन-निर्वाह का खर्चा बहुत बढ़ गया. पढ़ाई-लिखाई में खान-पान में, स्वाद-शौकीनी में, रहन-सहन में खर्चा बढ़ गया और कहते हैं कि स्टैण्डर्ड ऊँचा करने में, पेट भरने में लगा दिया और आँख से कुछ दीखता ही नहीं है कि भगवान् क्या हैं? संसार क्या है? मैं कौन हूं? मेरे को क्या करना है? रात-दिन'हाय पैसा! हाय पैसा!' करते हैं. अगर 'हाय भगवन्! हाय भगवन्!' करें तो निहाल हो जायं! जिस लगन से धन कमाते हैं, उस लगन से साधन करें तो कल्याण हो जाय! परन्तु साधन की यह दशा है कि नित्य नियम पूरा हुआ तो सोचते हैं कि आज की आफत तो मिटी! माला पूरी हुई तो मानों जेल से छूट गये! दूकान में रोज सौ रूपये कमाते हैं और वे सौ रूपये अगर सुबह ही पैदा हो जायं तो भी दूकान दिनभर खोलकर बैठे रहेंगे. पर जप पूरा हो जाय तो माला लपेटकर रख देंगे! यह क्या है? यह उल्टी पुड़िया ले ली. इसलिये जो मिला है, उस में सन्तोष करें; अपने कर्तव्य का तत्परता से पालन करें, दूसरों की सेवा करें और भगवान् का भजन-स्मरण, सत्संग-स्वाध्याय करें तो आँख की पीड़ा भी ठीक हो जायगी और पेट की पीड़ा भी.

क्या आप जानते हैं?

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-२

(५ अप्रेल तक सही हल भेजने वालो के नाम अप्रेल अंक में प्रकाशित होगें)

प्र.१ सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के माता-पिता का क्या नाम था?
उत्तर...

प्र.२ सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने किस बालक को नदी में डूबने से बचाया था?
उत्तर...

प्र.३ सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की समाधि स्थल कहां बनी हुई है?
उत्तर...

प्र.४ आचार्य श्री ने दुकान पर क्या लिखवा रखा था?
उत्तर...

प्र.५ प्रेम प्रकाश सन्देश में सांई टेऊँराम लीला चित्र कथा की प्रस्तुति किसकी है?
उत्तर...

प्र.६ प्रेम प्रकाश सन्देश फरवरी अंक में विद्यार्थी के पंच लक्षण कौन से बताये गये हैं?
उत्तर...

प्र.७ इस वर्ष २००४में कुम्भ मेला कहां लगाया जा रहा है?
उत्तर...

प्र.८ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्य मेला कौनसा है और कहां लगाया जाता है?
उत्तर...

प्र.९ प्रेम प्रकाश सन्देश (पत्रिका) के संस्थापक कौन थे?
उत्तर...

प्र.१० आचार्य श्री का मुख्य प्रसाद क्या है?
उत्तर...

(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होगें)

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-१ उत्तर

१.आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज.,२.प्रेम प्रकाश सन्देश, ग्वालियर से

३.श्री अमरापुर स्थान, जयपुर से ,४.शनिवार, सिन्धी चौथ तिथि,

५.ऊँ श्री सत्नाम साक्षी.,६.जयपुर में

७.श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ.,८.सिन्ध प्रदेश, खण्डू गांव

९.दादा स्वामी आसूराम जी महाराज.,१०.सचनि जो दूल्ह दरिया शाह.

सिंहस्थ महापर्व २००४

कुम्भ मेले का शुभारम्भ

उज्जैन में मेष राशि में सूर्य, सिंह राशि में गुरू आने पर, इसलिए यहां के महाकुम्भ मेला को सिंहस्थ नाम से जाना जाता है.

सिंहस्थ कुम्भ मेला

संसार के इस सबसे बड़े धार्मिक मेले की परम्परा बहुत प्राचीन है. भारत के चार नगरों, प्रयाग (इलाहाबाद) नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में कुम्भ मेला आयोजित होता है.

साधारण मनुष्यों और असाधारण साधुओं के मेल का ऐसा मेला दुनिया में और कहीं देखने को नहीं मिलता. एक लघुभारत को समेटे हमारी प्राचीन परम्परा, अद्भुत संस्कृति, समृद्ध संस्कार, धार्मिक विरासत के प्रतिनिधि पर्व के रूप में है सिंहस्थ.

सिंहम्थ अमृत कुम्भ कथा

सिंहस्थ क्यों [illegible] हैं. इसे लेकर अनेक कथाएं है. लेकिन सबसे अधिक प्रामाणिक कथा समुद्र मन्थन की है. पौराणिक कथा है कि देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया और अमृत कलश प्राप्त किया. अमृत को दानवों से बचाने के लिए देवताओं ने इसकी रक्षा का दायित्व बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य और शनि को सौंपा. देवताओं का प्रमुख इन्द्रपुत्र जयन्त वह अमृत कलश लेकर भागा. दानव इस चाल को समझ गये. इस कारण देवता और दानवों में भयंकर संग्राम छिड़ गया. यह संग्राम १२ दिन चला (देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है) अर्थात् युद्ध १२ वर्षों तक चला. इस युद्ध में अमृत कलश की बूंदें छलक पड़ीं और धरती पर हरिद्वार, प्रयाग (इलाहाबाद), नासिक और उज्जैन में गिरीं. इस अमृत कलश की रक्षा में सूर्य, गुरू और चन्द्र के विशेष प्रयत्न रहे. इसी कारण इन्हीं ग्रहों की उन विशिष्ट स्थितियों में कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा है. मान्यता यह है कि अमृत कलश से छलकी बूंदों से इन चार स्थानों की नदियां गंगा, यमुना, गोदावरी और शिप्रा अमृतमय हो गईं. अमृत बूंदें छलकने के समय जिन राशियों में सूर्य, चन्द्र गुरू की स्थिति उस विशिष्ट योग के अवसर पर रहती है, वहां कुम्भपर्व इन राशियों में ग्रहों के संयोग होने पर होते हैं.

उज्जैन पहुंच मार्ग

रेल मार्गः- उज्जैन शहर दिल्ली-मार्ग के नागदा स्टेशन से भोपाल स्टेशन जो दिल्ली नागपुर लाइन पर है, के बीच रेल लाइन पर स्थित है.

सड़क मार्ग :-

उज्जैन-आगर-कोटा-जयपुर

उज्जैन-बड़नगर-नीमच-उदयपुर

उज्जैन-इन्दौर-मुम्बई

उज्जैन-देवास-भोपाल-जबलपुर

उज्जैन-मक्सी-आगरा

वायु मार्गः-

उज्जैन से ५५ कि.मी. दूर इन्दौर विमानतल जेट एयरवेज तथा इंडियन एयर लाइन्स से दिल्ली, मुम्बई और भोपाल से जुड़ा है.

स्नान

१. चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार, विक्रम संवत २०६१ दिनांक ५ अप्रैल २००४

२. वैशाख कृष्ण अमावस्या, सोमवार विक्रम संवत २०६१ दिनांक १६ अप्रैल २००४

३ वैशाख शुक्ल तृतीया, गुरूवार विक्रम संवत् २०६१ दिनांक २२ अप्रैल २००४

४. वैशाख शुक्ल पंचमी, शनिवार विक्रम संवत् २०६१ दिनांक २४ अप्रैल २००४

५. वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार विक्रम संवत् २०६१ दिनांक ४ मई २००४ शाही स्नान

मेला अवधि

वर्ष २००४ में आयोजित होने वाला सिंहस्थ मेला ५ अप्रैल २००४ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार संवत् २०६१ को प्रथम स्नान से प्रारंभ होगा और ४ मई २००४ वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार संवत् २०६१ को शाही स्नान से समाप्त होगा.

महापर्व में स्नान का महत्वः-

हजारों स्नान कार्तिक मास में तथा सैंकड़ों स्नान माघ मास में किये हों, वैशाख मास में करोड़ो बार नर्मदा में स्नान किये हों, वही फल एक बार कुम्भ में स्नान करने से मिलता है. हजारों अश्वमेघ यज्ञ, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ करने तथा लाखों प्रदक्षिणा पृथ्वी की करने पर जो फल मिलता है, वही फल कुम्भ पर्व में स्नान से मिलता है.

यात्रा दर्शन

सत्संग ज्ञानामृत

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संत मण्डली का देशाटन

सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा की प्रवाहित भक्तिरसधारा में डूबे भक्तजन

डबरा-मुरैना में प्रेम प्रकाश आश्रम उद्घाटन-प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

भण्डारा ६ फरवरी

सिवनी से भण्डारा पहुंचने पर श्री मुरलीधरजी व अन्य प्रेमियों ने सद्गुरू महाराजजी का आत्मीय स्वागत किया. झूलेलाल मंदिर में आयोजित सत्संग सभा में प्रेमियों को भगवन्नाम का अमृत पिलाते हुए सद्गुरू महाराजजी ने सर्वप्रेमी भक्तों को सत्कर्म करने के लिए शुभाशीष दिया, इसके पूर्व आश्रम के लिए ली गई भूमि का अवलोकन भी सन्तों के साथ सद्गुरू महाराज ने किया. ७ फरवरी को प्रातः ६ बजे बहिन आशा के घर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब का आरम्भ करके सन्तमंडली व सद्गुरू महाराज अमरापुर बस द्वारा नागपुर के लिए रवाना हो गए!

नागपुर ७ से ९ फरवरी

७ फरवरीः-प्रातः १० बजे नागपुर पहुंचने पर डॉ. मनवानी व संगत ने पुष्पवर्षा द्वारा पूज्य सद्गुरू महाराजजी व संतमंडल का स्वागत किया. दोपहर १२:३० बजे सद्गुरू महाराज ने प्रेम प्रकाश आश्रम के लिए खरीदी गई भूमि (प्लाट नं. २४७A जरीपटका) जिसका क्षेत्रफल २७६२sq.ft. है, का अवलोकन करके श्री माखीजा के यहां भोजन प्रसादी पाकर वापिस कमल मनवानी के निवास पर विश्राम किया. सायं ६ से ८ बजे तक सत्संग में सन्त नरेशलाल (इन्दौर) ने बन्दी छोड़ महाराज की कथा के माध्यम से समझाया कि हमें गुरू की शरण में रहकर संसार के झूठे बन्धनों से छूटने की युक्ति सीखकर जीवन मुक्त होकर जग में विचरना चाहिए. सन्त श्रीमुक्त ने सतगुरू महाराज की जन्म साखी व सन्त हरीशलाल (गोंदिया) ने भी गुरू की शरणागति पर ही जोर दिया तत्पश्चात् पूज्य सद्गुरू महाराजजी ने अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा प्रार्थना के महत्व की कथा सुनाते हुए बताया कि सिन्ध में गुरू महाराज के प्रेमी श्री आवतराय की निःसंतान धर्मपत्नि अपनी दुख भरी दास्तान सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास लाई तो स्वामी जी ने उसे प्रभू परमात्मा को प्रार्थना करने की प्रेरणा दी. वचनों पर विश्वास रखकर प्रार्थना करती रही. प्रार्थना का ऐसा चमत्कार हुआ कि उसे दो पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई.

पारी थी आई स्वाली, गुर झोली भरियो खाली, खिटपिट घर मां हटाए, खाविंद कयो खुशहाली, जोड़ो लालन जो पाए, खिलंदी वई हिन द्वार तां, खाली न मोटयो कोई, सतगुर जी दरबार तां अन्त में पल्लव पाकर आज की सत्संग सभा का समापन किया.

८ फरवरीः- प्रातः ८ बजे सिन्धी गुरू संगत दरबार में प्रेमियों के मन पर वचनों की वर्खा करते हुए कहा प्रातःकाल जल्दी उठकर एकांत में बैठकर गुर शब्द का अभ्यास करके मन के संकल्प विकल्प को शान्त करना चाहिए. यह दुर्लभ मानव शरीर जन्म लेते ही पुरानी सारी स्मृतियां विस्मृत हो जाती हैं इसलिए इन्द्रियों को संसार के विषय विकारों से मोड़कर नाम स्मरण में लगाना चाहिए. **मन की तरंग मार ले बस हो गया भजन.**

सांय ५ से ७ बजे की सत्संगसभा में भक्त केवलरामजी ने प्रवचन किए कि इस जीवन का समस्त भार भगवान के हाथों में सौंपकर निश्चिन्त हो जाना चाहिए तत्पश्चात् पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने पुराने प्रेम प्रकाश आश्रम पर अमृताशीष देते हुए कहा कि इस नाशवन्त विषयों के विष से जलते हुए संसार में अपने मनको सत्पुरूषों के सानिध्य में यानी हरे भरे वृक्ष की शीतल छाया रूपी सत्संग में अमृतपान कराकर हरिनाम की मस्ती में मस्त करना चाहिए.

रात्रि ७:३० से ९:३० बजे तक सत्संग कार्यक्रम झूलेलाल मन्दिर, सुभाष रोड़, गांधी सागर तालाब के ठीक किनारे पर हुआ. ऐसा लग रहा था मानो दूल्ह दरिया शाह के किनारे पर खंडू नगर में बैठें हों वहां पर सन्त नरेशलालजी ने उपस्थित प्रेमियों को मानसिक रूप से खंडू नगर ले जाकर उस दृश्य की याद दिलाई जब बाल अवस्था में स्वामी टेऊँराम जी ने खिल्लू को दरियाशाह से निकाला था तत्पश्चात् पूज्यश्री ने जल अवतार वरूणदेव के अवतार धारण करने का कारण भक्तों की श्रद्धा व प्रेम भाव से भरी पुकार बताया. **प्रेम से सूनी पुकारें मैं कभी सुनता नहीं**

९ फरवरीः- प्रेमियों के घरों को चरणाविन्द से पवित्र करते हुए लगभग ११:३० बजे दोपहर को श्री रामरख्यानी के निवास पर पहुंचे जहां कल ही उनके सुपुत्र श्री प्रकाश का विवाह संस्कार गीता के साथ सम्पन्न हुआ था. वहां पर सत्संग करते हुए श्री सतगुरू महाराज जी ने भजन गायाः मुंहिजो गुरू गरीबनिवाज़ आ, जहं पूरो कयड़ो काज आ किसी भी कार्य की शुरूआत करने से पहले प्रभू परमात्मा व सद्गुरू देव भगवान को प्रार्थना

करने से सभी प्रकार की विघ्न बाधाऐं दूर हो जाती हैं क्योंकि जीवन यात्रा में अनेक परेशानियां, दुख व कष्ट आते हैं.

धर्म व मर्यादा का पालन करते हुए गृहस्थ जीवन में अपने बड़ो-सन्तों व सद्गुरू को नित्य प्रणाम करने से आयु, यश, बल व बुद्धि की प्राप्ति होती है जिससे हमारा व्यवहार व परमार्थ सुधर जाता है. पूज्य स्वामीजी ने चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को अधिक महत्व दिया. अन्त में युगल जोड़ी को आशीर्वाद स्वरूप पाखर पहनाकर पल्लव पाया.

रात्रि ७ से ९ बजे तक झूलेलाल मंदिर में आयोजित सत्संग सभा में सन्त संजय ने स्वामी टेऊँराम की जीवन महिमा का भजन गाकर संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया तत्पश्चात् गुरू महाराज जी ने सत्संग की मौज में कहा कि अभ्यास व वैराग्य के बिना मन को नियंत्रित करना बहुत मुश्किल है उदाहरण देकर समझाया कि एक प्रेमी कबीर साहिब के दर्शन के लिए आया लोई ने कहा कि कबीर साहिब श्मशान घाट गए हैं वो प्रेमी बोला मैंने कबीर साहिब को पहले नहीं देखा है सो कोई निशानी बताओ. लोई ने कहा जिसके सिर पर मुकुट हो वही समझना कि कबीर साहिब है. प्रेमी ने देखा कि जितने भी लोग श्मशान में है, सबके सिर पर मुकुट हैं, प्रेमी असमंजस में पड़ गया लेकिन जैसे ही एक-एक करके लोग बाहर निकलते गए उनके सिर से मुकुट अदृश्य होता गया, जैसे ही कबीर साहिब बाहर निकले तो उनके सिर पर मुकुट था प्रेमी चरणों पर गिर पड़ा व मुकुट के अदृश्य होने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि यह मसानी वैराग्यरूपी मुकुट था जब तक श्मशान में थे तब तक मनमें संसारकी नश्वरता का वैराग था लेकिन जैसे ही बाहर निकले वापिस संसारके झंझटों व कार्योंमें उलझनेके कारण वह वैराग्यको भूल जाता है.सच्चा वैराग्य वही है जो सदैव हमारे मनमें रहे.

कामठी १० फरवरी

प्रातः ८ बजे डॉ. मनवानी के घरसे रवाना होकर श्रीराम सिन्धु भवन, ओली, कामठी, में प्रेमियों द्वारा स्वागत सत्कार करने के बाद सद्गुरू महाराज ने सत्संग के माध्यम से समझाया कि अल्पकाल के जीवन में प्रभू प्राप्ति के साधन शीघ्रातिशीघ्र अपनाने चाहिए लेकिन हमें संसारियों का संग ज्यादा मिला है व सतपुरूषों का सानिध्य कम इसलिए हमारी वृत्ति अन्तर्मुखी होने की जगह बहिर्मुखी होती जा रही है. संतों का संग करके हमें अपनी विवेक शक्ति को जाग्रत करना चाहिए. दोपहर ११:३० बजे भगवानदास दीपानी के गृह प्रवेश के अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का भोग साहिब डाला गया व डॉ. अनिल के निवास पर विश्राम करने के पश्चात् शाम ६ से ८ बजे के सत्संग में संत लक्ष्मणदास ने मेरे सतगुर टेऊँराम साहिब, चरणों में अपनी जगह देना मधुर स्वर में गाकर संगत को मस्त कर दिया. तत्पश्चात् पूज्य सद्गुरू महाराज जी ने मधुरवाणी में फरमाया कि हम छोटे से जीवन के लिए संसार के कितने सारे पदार्थ इकट्ठे करने में लगे हुए है इसलिए संसार के दुखों ने हमको घेर लिया है व मन में शांति नहीं है. जैसे कोई चन्दन की लकड़ी को जलाकर भोजन बनाने के काम में ले व उसकी कीमत का पता न हो जब पता लगे तब बहुत पछताए उसी तरह हमें मनुष्य शरीर चन्दन की तरह मिला और हमने विषय विकार रूपी अग्नि में जला डाला लेकिन सद्गुरू द्वारा हमें इस मनुष्य शरीर की कीमत का ज्ञान कराया जाता है. **साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाय न जिंह परलोक संवारा** पल्लव पाकर नागपुर-कामठी यात्रा की इतिश्री हुई.

अमरावती ११ फरवरी

प्रातः ७:३० बजे नागपुर से अमरावती के लिए सद्गुरू महाराज जी के सानिध्य में संतों का काफिला रवाना हुआ. लगभग ९:२५ बजे तलेगांव के प्रेमियों ने सद्गुरू महाराज व संतों का स्वागतकर बड़े प्रेमभाव से जलपान करवाया. आरवी नामक गांव के प्रेमी भी सतगुरू महाराज के दर्शनों के लिए आए. अमरावती पहुंचकर श्री नारायणदास हेमराजानी के निवास पर विश्राम किया. शाम ४ से ६ बजे तक आयोजित सत्संग रामपुरी में पुराने स्थान श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पर हुआ. सन्त लालूराम ने **प्रभू तोखे आऊं परचायां दर्दीले स्वर** में गाया. सद्गुरू महाराज ने संग के प्रभाव का महत्व समझाया कि जैसे लोहा लकड़ी का संग करके सागर में तैरता है, डूबता नहीं है वैसे ही हमें भी सतपुरूषों का संग करके संसार रूपी सागर से तरना चाहिए. तत्पश्चात् सुमति व सद्बुद्धि के दान की प्रार्थना, पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया. सांय ६ से ८ बजे तक सत्संग सन्त सतरामदास के पावन स्थान सेवा मंडली में किया गया. जहां पर सतगुरू महाराज ने अमृतवचनों की वर्खा की कि यह मनुष्य देही जिसको ३३ करोड़ देवता भी चाहते हैं इसको विषय रूपी लात मारकर चौरासी में मत डुबाओ. साध संगत के साथ मिलकर अपने मन की वृत्ति को संसार से मोड़कर प्रभु चरणों में लगाना चाहिए, यह तभी होगा जब हम संतों का संग करके गफ्लत रूपी नींद से जागकर अपने बन्धन अपने आप खोलेंगे, यह सब पुरूषार्थ व प्रार्थना द्वारा सम्भव हो सकता है.

प्रातः ८ बजे का सत्संग कार्यक्रम वी.आई.पी. अपार्टमेन्ट में रखा गया था जहां पर जीवन की दिनचर्या पर प्रकाश डालते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि अगर हमने नाम-स्मरण को छोड़कर संसार के बड़े-बड़े काम कर भी लिए तो समझ लो कि हमने कुछ भी नहीं किया. हमें हंस की तरह दूध व पानी को अलग करने की युक्ति सीखनी चाहिए. संसार की नश्वरता व प्रभू की व्यापक सत्ता की सीख हमें महापुरूषों के सानिध्य में मिलती है इसलिए मानव शरीर रूपी सुनहरी मौका हमें चूकना नहीं चाहिए. पल्लव पाकर अमरावती से अकोला के लिए प्रस्थान हुआ.

अकोला १२ फरवरी

अकोला पहुंचने पर बड़ी बेसब्री से इन्तजार करते हुए प्रेमी बैंडबाजों के साथ मधुरधुनि गाते हुए सद्गुरू महाराज के ऊपर पुष्पवर्षा करते हुए हर्षित हो रहे थे. दोपहर भोजन के पश्चात् सायंकाल सत्संग में पूज्य श्री ने कहा कि परोपकार के समान कोई पुण्य नहीं व दूसरों को पीड़ा पहुंचाने के समान कोई पाप नहीं इसलिए संत महात्माओं का संग करके,

शुभकर्म कमाकर व नाम स्मरण करके मनुष्य देही को सफल बनाना चाहिए. स्वामीजी का स्वागत पूज्य देवरी साहब संत सतरामदास धाम द्वारा भी किया गया, श्री शोभराज दादा, हरीश-मुकेश आलमचंदानी, सोनू डेम्बरा, विक्रम खोतवानी, दिनेश पाहूजा के अतिरिक्त अकोलावासी पूज्य सद्गुरू महाराज के दर्शन कर कृतार्थ हुए. सत्संग का कार्यक्रम सांई सतरामदास धाम में रखा गया था.

अजमेर १४ फरवरी
स्वामी ईश्वरानंद वर्सी महोत्सव

सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के परम शिष्य स्वामी ईश्वरानन्दजी महाराज के ११वें वर्सी महोत्सव १४ फरवरी २००४ को स्वामी ग्वालानन्द आश्रम अजमेर में सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का संतमंडली के साथ पधारने पर भव्य स्वागत किया गया. स्वामी चेतनकृष्ण स्वामी ग्वालानन्द आश्रम अजमेर, श्री नारायणदास रतनानी (ट्रस्टी) प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्शनगर अजमेर, ओम प्रेम प्रकाशी दिल्ली,भगत शंकर,मोहन शिवनानी अजमेर एंव ब्यावरसे पधारे संत भोलाराम एंव सत्संग में पधारे असंख्य प्रेमियों ने सद्गुरू महाराज एंव संत मण्डली का फूलों एवं मालाओं के साथ भव्य स्वागत किया.

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ संत झामनदास (भीलवाड़ा), संत दयाप्रकाश, संत नरेश प्रेमप्रकाशी, संत लक्ष्मण प्रेम प्रकाशी, संत लालूराम प्रेमप्रकाशी, भगत श्रीमुक्त एवं समस्त संतमंडली ने अपनी अमृतरूपी वाणी से उपस्थित प्रेमियों को सत्संग गंगा में ज्ञान की डुबकीयां लगवाकर मंत्र-मुग्ध कर दिया. सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में बताया कि स्वामी ईश्वरानन्द महाराज ने सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज व स्वामी ग्वालानन्द महाराज जी की शरण में रहकर तपस्या कर परोपकार त्याग की शिक्षा पाकर सद्गुरू महाराज के पद्चिन्हों पर चलकर आत्मज्ञान प्राप्त किया. उनकी शरण में बैठकर उनसे नाम सुमरन का दान एंव भक्ति पाकर गुरू महाराज के नाम का प्रचार कर अमर हो गये, जिनकी याद में आज भी मेले वर्सी आदि मनाये जाते है.

सद्गुरू महाराज ने हमें समझाया है कि संसार के समस्त भौतिक पदार्थ जो हम ईश्वर मे मांगते है वह या तो नाशवान है या हमारे साथ अंत में साथ नहीं जाते हैं या जिनको चोर चोरी कर जाता है. अतः हमें अपने मन में यह विचार करना चाहिये कि प्रभु परमात्मा सद्गुरू से ऐसी चीज मांगनी चाहिये जो न तो नाशवान हो और न ही उसे कोई चोर चोरी कर सके जो वस्तु हमारे साथ अंत समय में साथ जाये वह है 'रामनाम' का सुमरन. इसलिए हमें गुरू महाराज की शरण में जाकर उनसे नाम सुमर एवं सुमति का धन प्राप्त कर सच के सौदे को संतो से संतवाणी में प्र करना चाहिये. ताकि हम भी इस संसार के आवागमन के चक्कर से मुक्ति प्राप्त कर ईश्वर की प्राप्ति करें.

सद्गुरू महाराज ने अपने अमृत वचनों के साथ पल्लव पाकर वर्सी महोत्सव की समाप्ति कर हजारों श्रद्धालुओं, प्रेमियों को सत्संग ज्ञानामृत मनोहारी दर्शनों से लाभान्वित कर संत मंडली के साथ जयपुर के लिए प्रस्थान किया. मोहन शिवनानी, अजमेर से

जयपुर १५ फरवरी

श्री गुरूधाम श्री अमरापुर स्थान में आयोजित नेत्र शिविर का समापन, सत्संग व अन्य अनेक कार्यक्रमों में सद्गुरू महाराजजी ने सम्मिलित होकर प्रेमी भक्तों की प्यास बुझाई.

ग्वालियर १६ से १६ फरवरी
स्वामी गणेशानन्द जयंती

रविवार १५ फरवरी प्रातःकाल की मधुर बेला में ५ बजे आश्रम से विशाल जनसमूह के साथ प्रभातफेरी निकली. धन गुरू टेऊँराम हरे कृष्ण हरे राम, राधे राधे श्याम मिलादे इत्यादि संकीर्तन करते प्रमुख रास्तों से श्री गुरू महाराज जी के प्रभातफेरी का स्वागत प्रेमियों एवं वैकुण्ठ आश्रम ट्रस्ट व झूलेलाल चेरिटेबल ट्रस्ट माधोगंज द्वारा किया गया. सांयकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग की सुन्दर बेला में महाराज बाड़ा स्थित धर्मपुरी मंदिर के सन्त दादाजी की भक्तमण्डलीने भजनों की धूम मचायी जिससे सारा आश्रम भावविभोर हुआ. सन्त महिमा का गान करते हुए सन्त दादा श्री रमेशलालजी जो कि आश्रम के व्यवस्थापक व संचालक है ने बताया कि ईश्वर भजन द्वारा सन्तों का जीवन श्रेष्ठता को प्राप्त होता है अनंत गुणों के समूह से भरा संत जीवन हमारें लिये प्रेरणा स्त्रोत है.

१६फरवरी प्रातःकालीन सत्संग राम नाम कीर्तन व प्रार्थना से शुरू हुआ तत्पश्चात् प्रेमियों द्वारा महिमाभजन गाये गए,निजधाम आश्रमसे पधारे सन्त श्री दयालदासजी द्वारा सत्संग का कार्यक्रम रहा. सत्संग उपरान्त आश्रम पर ३८ बच्चों का जनेऊ संस्कार वेद विधि अनुसार सिन्धी समाज के पंडित सुनील शर्मा व अशोक शर्मा द्वारा किया गया व सभी बच्चों के केशों का मुण्डन भी कराया गया तत्पश्चात् जीवन कल्याण सम्बन्धित सुन्दर शिक्षाएं भी बच्चों को दी गयीं जिनमें मुख्य निम्नांकित थी.

१. ८ साल से १३ साल के अन्दर जनेऊ संस्कार करना चाहिये.
२. जनेऊ कभी उतारना नहीं चाहिए.
३. प्रत्येक पूजा कार्य जनेऊ पहनकर ही करना वेदविहित है.
४. जनेऊ पुराना या टूट जाने पर पंडित या दरबार से नया लेकर पहनना.
५. झूठ व पाप से दूर रहना, बड़ो की सेवा व आज्ञा का पालन करना.
६. पुस्तकों का सम्मान करना झुठे मुंह से विद्याध्ययन न करना.
७. माता-पिता सन्त गुरू ब्राह्मण कन्या का आदर करना.
८. सदैव मीठा बोलना,नम्र रहना क्रोध न करना क्रोध करने से पुण्य का नाश होता है. इत्यादि शिक्षाएं दी.

१६ फरवरी प्रातःकाल को ६:४५ बजे अमरापुर स्थान जयपुर से चलकर सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज आगरा के भक्त कन्हैयालाल

के भतीजे के विवाह उत्सव उपलक्ष में आगरा में उनके यहां पर पधारकर भोजन भण्डारा उपरान्त, केदार नगर होते हुए शाम ५:३० बजे ग्वालियर क्षेत्र में प्रवेश किया, नगर प्रवेशद्वार पर कई प्रेमी पूज्य गुरूवर व सन्तमण्डली के स्वागत हेतु उपस्थित थे, फूलों व फूलमालाओं से जयघोष करते एक वाहन रैली में पूज्य गुरू महाराजजी को माधोगंज थाने चौराहे पर लाया गया.१०८ महिलाओं द्वारा एकसी वेशभूषा में कलश धारणकर व श्री अमरापुर नवयुवकमण्डली के सदस्यों द्वारा एकरूपता लिए वेशभूषा पहनकर हजारों भक्तजनों के साथ आतिशबाजी जलाते हुए एक शोभायात्रा में पूज्य स्वामीजी को शहनाई ढोल वादन व डांडियो के मधुर तान से नाचते गाते हुए लगभग ६:४५ पर आश्रम लाया गया. जहां आकर्षक रूप से सजे सुन्दर मण्डप पर दर्शन उपरान्त पहुंचे आश्रम की शोभा कहने व लिखने से बाहर है स्वर्गिक आनंद प्रतीत हो रहा था. सत्संग मण्डप में प्रेमी भक्तों द्वारा सुन्दर भजनों का गान किया गया.सन्त हरिओमलाल जी द्वारा सत्संग किया जा रहा था बड़ी संख्या में संगति पहले ही बैठे आनंद ले रही थी, श्री गुरूवर के पधारने पर सारी संगति से पूरा पंडाल खचाखच भर गया. श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा आशीष वचन कहे गए व पूज्य आचार्य सतगुरू टेऊँरामजी महाराज,स्वामी श्री गणेशानन्द जी महाराज के स्वरूपों को माल्यापर्ण भी किया,पल्लव पाया व प्रसाद वितरण हुआ.

१७ फरवरी को प्रातः ८ से १० व सायं ४:३० से ७:३० बजे तक सत्संग की मौज रही, रात्रि को आमभंडारे में ३ हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी पायी.

१८ फरवरी महाशिवरात्रि का पावन पर्व व पूज्य श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का प्राकट्य दिवस की प्रातः बेला में ६ बजे से हवन की तैयारियां होने लगी, सभी प्रेमियों में प्रेम का प्रवाह था. देव पूजन उपरान्त श्री आचार्य व पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का फूलमाला व तिलक आदि से पूजन कर श्री दुबेजी द्वारा हवन आरम्भ किया गया जिसमें सन्त श्री जयदेवजी महाराज, सन्त झामनदासजी, सन्त संजय कुमार, सन्त लक्ष्मण, सन्त श्रीमुक्त, भक्त मूलचन्द, सन्त हरिओमलाल जी व पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज भी उपस्थिति थे अन्त में श्री गुरूवर द्वारा पूर्णाहुति करके आरती की गयी तत्पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम रहा व सत्संग उपरान्त आश्रम ऊपरी तल पर ध्वजावन्दन की तैयारियां होने लगीं. इसी बीच स्वामी शांतिप्रकाश नेत्र अस्पताल में आंखो की जांच की अत्याधुनिक मशीन की स्थापना पूज्य गुरू महाराज जी के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुई तत्पश्चात् ध्वजावन्दन किया गया. श्री अमरापुर नवयुवकमंडली के बच्चों में प्रसन्नता की लहर थी कि मानो तन-मन की सुधि भूल बैठे ज्योंही भजन शुरू हुआ हम गीत सनातन गायेंगे, नित झंडा धर्म झुलायेंगे, स्वामी टेऊँराम तुहिंजो झंडो झूले सभी सन्त प्रेमी नाचते मस्त हो गये शहनाई वादन ढोल वादन व डांडियां से सारे प्रेमी माताऐं झूम उठे तत्पश्चात् आरती की गयी व श्री गुरूवर द्वारा पल्लव पाया गया. सांयकाल सत्संग का कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसमें सन्त श्रीभुक्त, अजमेर से श्री शंकरलाल नारवानी, भक्त मूलचंद, सन्त संजय व ग्वालियर आश्रम की बहिन लाजवन्ती द्वारा भी प्रवचन किये गये. जिसमें रामायण से सम्बन्धित गुरू महिमा का कथन व सन्तों के श्रेष्ठ गुणो का गान हुआ. अन्त में सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा मानव जीवन की महानता ईश्वर भजन व श्रेष्ठ गुणों जैसे नम्रता ईश्वर परायणता व माता-पिता गुरू सेवा के साथ अतिथि सेवा भक्ति की व्याख्या की गई.

१९ फरवरी आज पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के पंच दिवसीय जन्म महोत्सव मनाये जाने का अन्तिम दिवस है महापुरूष दुनियां में बड़े काम को आते हैं. मिटाते खौफ मरने का अमर बनना सिखाते हैं आचार्य सतगुरू टेऊँरामजी महाराज के चरण शरण में रहकर उनकी शिक्षा उपदेश को हृदय में धारण कर त्याग वैराग्य गुरूभक्ति की कठिन डगर पर चलते-चलते वे भी परम पद को पा गये हमें भी उनके जीवन से यही नाम का स्मरण करते हुए गुणों को धारण करते हुए सादगी सरलता नम्रता विश्वास श्रद्धा से अपने मन बुद्धि के अन्तर सुमति का प्रकाश कर जीवन को सफल करना चाहिए. पूज्य महाराजश्री ने उपरोक्त वचनोंके साथ सत्संग पूर्ण किया तत्पश्चात् पाठों का भोग पारायण हुआ. अन्त में भगवान व श्री गुरूवर आचार्य की आरती कर पल्लव पाया जिसमें देश विदेश से पधारे मेहमान व आस-पास के प्रेमी भक्तों लगभग ५००० से अधिक ने भण्डारे का प्रसाद पाया. सांयकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग हुआ जिसमें कई प्रेमियों ने सत्संग का आनंद पाया व सन्तों की वाणी वचनों का पान कर कृतार्थ हुए.

डबरा २० से २२ फरवरी
आश्रम उद्घाटन एवं मूर्ति स्थापना समारोह

ग्वालियर से लगभग ४२ किलोमीटर दूर डबरा जहां कि श्री गुरूदेव आचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के शिष्य व सेवक हैं जहां ३० वर्ष पहले प्रेमी श्री शंकरलाल के घर पर सत्संग का कार्य होता था. पूर्व में सतगुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज,सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज भी यहां आते थे व सत्संग दर्शन का सभी प्रेमी भक्त लाभ लेते थे. सन् १९९५ में भक्तों प्रेमियों व श्री गुरूवर के निर्णय पर आश्रम का विचार लिया गया, एक मिल वाले का थोड़ा हिस्सा लिया गया जहां सत्संग का आरम्भ हुआ. बाद में पीछे का स्थान भी लिया गया अभी निकट वर्षों में यहां नवीन आश्रम का निर्माण भी कराया गया जिसका उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ. दिनांक १८ फरवरी महाशिवरात्रि पर्व पर प्रातःकाल प्रार्थना सत्संग व आरती उपरान्त श्रीमद् भगवतगीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ आरम्भ, मूर्ति पूजन व हवन संत श्री नरेश (इन्दौर) द्वारा कराया गया, जहां कई प्रेमियों ने भाग लिया. सिन्धी समाज के पंचायतों व कई भक्तों प्रेमियों ने इस अवसर का पूर्ण लाभ लिया. दिनांक १९ फरवरी भी हवन पूजन का कार्यक्रम श्री अशोक शर्मा के नेतृत्व में अन्य ब्राह्मणो के सहयोग

से किया गया.

२० फरवरी को प्रातःकाल ग्वालियर आयोजन उपरान्त सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का सन्तमण्डली प्रेमियों सहित पधारने पर उनका स्वागत डबरा पंचायत व समस्त सिन्धी समाज शहरवासियों द्वारा किया गया. बैंड बाजों व शहनाई वादन द्वारा नाचते गाते प्रेम प्रकाश आश्रम ढीमरपुरा पहुंचे व वेद मंत्रो द्वारा रिबिन काटकर आश्रम में प्रवेश किया. भगवान श्री लक्ष्मीनारायण व आचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्री विग्रहों व सतगुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज,सतगुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज के स्वरूपों का अनावरण हवन यज्ञ के उपरान्त पूज्य स्वामीजी के कर-कमलों द्वारा किया गया. सत्संगसभा उपरान्त आरतीयां विधिवत की गयी, इसी समय कुछ विशेष ही मनमोहक दृश्य था जब सभी प्रेमियों के मध्य मंदिर प्रागण में सतगुरू महाराज संत मंडल के मध्य उपस्थिति थे. सन्तों के स्थान तीर्थ स्वरूप जहां ज्ञान भक्ति कर्म स्वरूप त्रिवेणी का प्रवाह प्रवाहित हो तो वहां की महिमा ही कुछ अलौकिक हो जाती है सर्वे दिठमिं वर बिया दुनिया जा पर निरालो शानु आ, संत स्वामी टेऊँराम जो, सजी दुनियां में नामु आ. सन्त सभी सिरमोर है सबको है प्रणाम, मेरे मन में बस रहें सतगुरू टेऊँराम.

२२ फरवरी रविवार आज प्रातःकाल ६ बजे से सत्संग का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें सन्त संजय,संत लक्ष्मण के साथ भक्त मूलचंद व सन्त श्रीमुक्त सन्त हरिओमलाल द्वारा प्रार्थना व भजन कीर्तन का आनंद किया गया. पूरा आश्रम प्रेमियों से भरा हुआ था. इस अवसर पर श्री सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अमृत वचनों द्वारा बतलाया कि प्रेम बिना पहुंचे नहीं को जन हरि के धाम कहे टेऊँ तांते जपो प्रेम सहित हरिनाम प्रेमवश शबिरी के यहां पर भगवान श्री राम पधारे सभी ऋषियों के द्वारों को छोड़कर. प्रेम करके ही भक्त नामदेव द्वारा प्रभू को मूर्ति से प्रकट कर खीर का भोग लगाया गया. ऐसे ही प्रभू लगन व प्रेम द्वारा सतगुरू टेऊँरामजी महाराज ने भक्तिनाम स्मरण से उच्चतम स्थान को प्राप्त किया तत्पश्चात् पाठों का भोग व आरतियां की गयी व आश्रम के ऊपरी तल पर ध्वजावन्दन किया गया जहां श्री गुरूवर, सन्त मण्डली व प्रेमियों का अपार समूह उपस्थिति था, स्वामी टेऊँराम तुहिंजो झंडो झूले सामूहिक गायन पर सारे प्रेमी नाचते नाचते मस्त हो गये यह दृश्य भी देखने योग्य था, जहां आकाश मंडल से सभी देवता किन्नर गंधर्व अवलोकन कर रहे थे ऐसा आवाज सुनाई दे रहा था. वाह-वाह स्वामी टेऊँराम, धन-धन आपकी भक्ति, धन आपका गाम, धन आपका नाम दिन दूनी रात चौगुनी के सदृश आपका आपकी भक्ति का प्रताप फैल रहा है, इसके उपरान्त आम भंडारा हुआ जिसमें कई भक्तों व प्रेमियों ने प्रसाद ग्रहण किया. इसी उद्घाटन समारोह के मध्य सन्त कंवरराम स्कूल-डिग्री कॉलेज में विशेष आयोजन व सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें समस्त सिन्धी समाज पंचायत प्रेम प्रकाश मण्डल के सभी सद उपस्थित रहे, सन्त श्री स्वामी कंवरराम जी की मूर्ति पर माल्यापर्ण पू गुरूवर द्वारा किया गया तत्पश्चात् स्कूल का अवलोकन करते हुए विश प्रांगणमें पहुंचे जहां बच्चों सहित अध्यापक व संचालक उपस्थित सर्वप्रथम मां सरस्वती की मूर्ति पर माल्यापर्ण व दीपप्रज्वलन हुआ, संचाल मण्डल द्वारा श्री गुरूवर का हार्दिक अभिनंदन किया गया व प्रसन्नता प्र करते हुये उपाध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा- सिन्धी समाज पर सन्तो विशेष कृपा रही है, सिंधी समाज ने सेवा के समस्त क्षेत्रों में एक वि स्थान अर्जित किया है. इस विद्यालय में विद्या के अलावा अनेक यंत्रो द्व व्यवहारिक ज्ञान भी बच्चों को दिया जाता है, गरीब बच्चों को बहुत क खर्च पर विद्यादान दिया जाता है. आज यह स्कूल पूरे मध्यप्रदेश में अप विशेष स्थान रखता है तत्पश्चात् एक स्कूल छात्रा ने भजन गाया ल मुहिंजी पति रखिजांइ भला झूलेलालण इसके उपरान्त श्री गुरूवर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आशीष वचनों से लाभान्वित् किया. बड़ा सु कार्यक्रम था जो कि पूरे डबरा शहर में सराहनीय रहा. लायन्स क्लब द्व स्थापित रक्तदान शिविर में प्रेम प्रकाश मंडली सदस्यों द्वारा रक्तदान कि गया, यहां पर २० कम्बल इस चिकित्सालय में तथा गरीबों को दान स्व दिए गये यह कार्य भी प्रेम प्रकाश मंडली द्वारा आयोजित सराहनीय र डाक्टरों ने प्रसन्नता प्रकट की कि सिन्धी समाज का यहां हमें विशेष योगद है तथा एमरजेन्सी में हमें रक्तदान की मदद समाज के हर सदस्य द्वारा जाती है.

डबरा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम के समीप सांई बीरबलदास मं के आमंत्रण पर उस मंदिर में भी पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश महाराज सन्तमण्डली के सत्संग का कार्यक्रम हुआ, यहां के व्यवस्थाप द्वारा आत्मीयतापूर्वक स्वागत किया गया. पूज्य गुरूवर द्वारा सांई बीरबलद महाराज को माल्यार्पण किया तत्पश्चात् अमृतवचनों द्वारा लाभान्वित किय दिनांक २२ फरवरी के सांयकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग का वि कार्यक्रम रहा प्रथम सन्त नरेश इन्दौर भक्त मूलचंद व सन्त श्रीमुक्त भजनों के आनंद से सारी संगति को भाव विभोर किया. गुरूवार स्वा भगतप्रकाश जी महाराज के प्रवचनों उपरान्त पल्लव पाकर उत्सव समापन किया गया.

दतिया-झाँसी २३ फरवरी

२३ फरवरी प्रातःकाल डबरा से चलकर ९:४५ पर झांसी न में पहुंचे जहां पर एक प्रेमीके घर पर स्वलपाहार कर लेने उपरांत सि धर्मशाला में पहुंचे, उपस्थित अपार जनसमूह के साथ पूज्य पंचायत द्व फूल मालाओं से हार्दिक स्वागत किया गया तत्पश्चात् १०:३० से १२ ब तक सत्संग का कार्यक्रम हुआ. प्रथम बार श्री गुरूवर झांसी के प्रेमियों आग्रह पर झांसी पहुंचे थे सारे प्रेमी दर्शन सत्संग का लाभ लेकर धन्य हु श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराजके साथ सन्त हरिओमलाल जी,स

श्री लक्षमण,सन्त संजय,सन्त श्रीमुक्त, भक्त मूलचंद,द्वारकादास के साथ अन्य कई प्रेमी शामिल थे. समस्त भक्तों प्रेमीयों को श्री गुरूवर ने भक्ति का उपदेश देते हुए कहा कि कलयुग में भवसागर पार तरने हेतु हरिनाम का सहारा सन्त संग व उनके द्वारा दिये गये ज्ञान वचनों का अनुसरण करने से ही जीव पार हो सकता है. ईश्वर से प्रेम व शुद्ध मन ही ईश्वर तक पहुंचने में सहायता प्रदान करता है, तत्पश्चात् आम भंडारा हुआ जिसकी व्यवस्था श्री मनोहरलाल जी के साथ अन्य प्रेमियों ने की थी.

झांसी से दोपहर २ बजे दतिया पहुंचे, स्वामी टेऊँराम धर्मशाला में अल्प विश्राम उपरान्त प्रेमियो के गृहों व प्रतिष्ठान पर चरन पखारते हुए सांयकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग में शामिल हुए. विदित हो यह विशाल स्वामी टेऊँराम धर्मशाला सम्पूर्ण दतिया में अपना विशेष स्थान रखती है, यह स्वर्गीय दादा बसन्तराम जी के अथक प्रयास व सतगुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज की प्रेरणा से बनी है जहां पर मनमोहक मंदिर भी स्थापित है. जहां पर प्रति शनिवार को सांयकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग होता है, दूर-दूर से प्रेमी भक्त आकर दर्शन सत्संग का लाभ लेते हैं. सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज प्रतिवर्ष इसी अवसर पर पधारकर प्रेमियों की प्यास पूरी करते हैं उन्होने अपने वचनों द्वारा सभी प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा मानव जीवन हरि स्मरण व प्रभु प्राप्ति हेतु मिला है **मिलयो मनुष्य जन्म तोखे आहे, सो व्यर्थ छदि न विञाए** शुभ कर्म करते हुए पाप दुर्गुणों से दूर रहना चाहिये, निज ज्ञान व परोपकार द्वारा ही ईश्वर धाम को पाया जा सकता है. सत्संग उपरान्त आरती होकर सारी संगति ने भंडारा प्रसाद पाया तत्पश्चात् ९ बजे समस्त प्रेमियों से विदा लेकर डबरा प्रेम प्रकाश आश्रम पर पहुंचे व प्रातःकाल २४ फरवरी को मुरैना हेतु प्रस्थान किया.

मुरैना २४ से २६ फरवरी
आश्रम उद्घाटन व मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

डबरा से प्रातः ७:१५ बजे चलकर ८:१५ बजे ग्वालियर में प्रवेशद्वार पर प्रेमीगण नाश्ता लेकर आए. स्वामी जी व सब सन्तो ने बस में से उतर कर एक सुन्दर बगीचे में वैठकर जलपान करके मुरैना के लिए प्रस्थान किया. सन्त प्रतापरायजी के नेतृत्व में प्रेमियों के विशाल समूह द्वारा सद्गुरू महाराजजी का स्वागत पुष्पवर्षा करके किया गया. इसके बाद रोडवेज बस स्टेंड से एक भव्य शोभायात्रा जिसमें सुन्दर आकर्षक रथ में सतगुरू महाराज आगे-आगे बैंड बाजे, महिलाएं सिर पर कलश लिए हुए पीछे-पीछे हरि नाम संकीर्तन करते ऐसा दृश्य,प्रेमीगण,सन्त मोनूराम, सन्त प्रतापराय, सन्त राजूराम, सन्त नरेशलाल (इन्दौर) नाचते झूमते गाते धुनि लगाते सिन्धी कॉलोनी स्थित आश्रम पर पहुंचे. पहुंचते ही पूज्यश्री ने मन्त्रोच्चारण द्वारा रिबन काटकर आश्रम का उद्घाटन किया, फिर भगवान लक्ष्मीनारायण व सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमाओं का अनावरण हवन यज्ञ में पूर्णाहुति डालकर किया. पल्लव पाकर सुबह के इस सभा का समापन हुआ. सर्वसन्त मण्डल व संगत ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया.

सांयकालीन सत्संगसभा में सतगुरू महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि किसी भी कीमत पर हमें हरि का नाम नहीं भूलना है लेकिन जब तक हमारा मन कामनाओं से भरपूर रहेगा, हमारे मन को शान्ति मिलने वाली नहीं. जैसे डाक्टर बीमारी की पहचान करके दवाई लिखकर देता है साथ-साथ परहेज भी करने को कहता है वैसे ही सतगुरू भी जिज्ञासु के मन की पहचान करके उसे नाम स्मरण की युक्ति व साथ-साथ परहेज यानि मन को विषय वासनाओं से अलग रखने की युक्ति बताते हैं. तो जो बीमार, डाक्टर के कहे अनुसार दवाई परहेज के साथ लेगा तो वो अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त होगा वैसे ही जो जिज्ञासु गुरू के कहे अनुसार नाम स्मरण करेगा वह परमात्मा को यानी अपने स्वरूप की पहचान करेगा. पल्लव पाकर शाम की सभा समाप्त की! इसके पूर्व सत्संगसभा की शुरूआत विद्यार्थी घनश्याम प्रेमप्रकाशी जो कि सन्त मोनूराम के साथ अमरापुर स्थान से आए थे ने मन दर्शन कर अपना बड़ा ही सुर से अच्छा भजन गाकर सुनाया. सन्त मोनूराम ने **मेरे सतगुरू टेऊँराम, चरणों मे जगह देना** भजन गाकर हमें प्रार्थना की महिमा के बारे में समझाया कि इस संसार रूपी भवसागर में सतगुरू के समान और कोई भी हमें पार नहीं कर सकता. पर सतगुरू कैसा हो जो कि ब्रह्मनेष्ठी, ब्रह्मश्रोत्री व ब्रह्मज्ञानी हो ये तीनों गुणों से भरपूर हमारे आचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध के खंडू नामक छोटे से गांव में अनंत जीवों का कल्याण करने के लिए अवतार धारण करके आए. ऐसे सतुपुरूषों की शरण लेंकर हम भी अपना कल्याण करें!

२५ फरवरी प्रातः ७:३० से ९:३० बजे की सत्संगसभा में श्री सोनी मुरैना वाले गायक कलाकार ने सांई शान्तिप्रकाशजी मस्त-मस्त भजन गाकर सब प्रेमियों को मस्त कर दिया. तत्पश्चात् सन्त प्रतापराय ने प्रभू प्रेम की महिमा बताते हुए कहा कि **प्रेम जब अनन्त हो गया, रोम-रोम सन्त हो गया, देह बन गई दीवालें मन मेरा महन्त हो गया.** हमारा प्रत्येक विचार ऐसा हो जिसमे हमारा लक्ष्य केवल परमार्थ की प्राप्ति हो. पूज्यश्री ने अपने प्रवचनों के द्वारा मन को समझाने की चेष्टा की कि हे मेरे मन अब भी जाग जा, अब भी कुछ नही बिगड़ा है, दया,धर्म,शुभ कर्म करके मन के द्वारा प्रभू-स्मरण में लग जा क्योंकि जो माल हाजिर होता है उसको चोर चुराकर ले जाते हैं. **इस देश में चोर चकोर घने, निज माल की राख संभाल जरा, केते हुशियार लुटा ही गये, नहीं साबित किसकी लाज रही, उठ जाग मुसाफिर चेत जरा, वो तो कूच की नौबत बाज रही, लिकी छिपी हरि नाम सुमरि जीअं सुधि न पवे संसार खे** जैसे किसी कुऐं में गन्दा पानी हो तो उसको निकालकर बाहर फैंक देंगे फिर जो उसमें साफ पानी भरा जायेगा वह पीने योग्य होगा वैसे ही मन के अशुद्ध विचारों को निकालकर देवी सम्पति के गुण धारण करेंगे तभी हमारे मन का झुकाव सन्तो सदगुरू व भगवान के प्रति होगा इसके लिए हमे सदगुरू से सुमति व

सदबुद्धि का दान मांगना होगा.

सांयकाल ५ से ७ बजे के सत्संगसभा में सन्त जयदेवजी (दिल्ली) ने गुरू सत् मार्ग बतलावे कोई विरला ही वहां जावे जैसे कोई दुकानदार एक रूपये की चीज को दो रूपये में बेचता है तो एक रूपया मुनाफा कमाता है लेकिन हाथ फिर भी खाली, इसी तरह हम जो सत्संग सुनते हैं, सन्त सेवा करते हैं, नाम जपते हैं दान पुण्य करते हैं उसका मुनाफा उसका फल कहां है, इस बात के विचार करने की युक्ति हमें सत्संग से मिलती है इसलिए सत्संग का आधार नही छोड़ना चाहिए.

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अमृतवर्षा करते हुए कहा कि प्रभू परमात्मा ने जो हमको मानुष देही दी है उसका फल यही है कि हरिनाम का जप करें क्योंकि यह मनुष्य जन्म की मौज हमको बारम्बार नहीं मिलेगी. एक दिन सब छोड़कर जाना पड़ेगा और जिस मिट्टी पत्थर के घर में रह रहे हैं उसको तो छोड़ना पड़ेगा लेकिन जिस पंचतत्व रचित शरीर में हम रह रहे हैं उसको भी छोड़ना पड़ेगा साथ ही हमने जिनको अपना बनाया-माया,काया,कुटुम्ब,रिश्तेदार वगैरह सबको छोड़कर जाना होगा. हिरण्यकश्यप ने भी हरि से वर लिया कि यह घर मैं नहीं छोडूं, रावण ने भी भगवान शंकर से यह घर न छोड़ने का वर मांगा था, विधि का विधान अटल है. इस घर से जाना ही होगा, [illegible] कितना रहना चाहीं यह घर तेरा प्रीतम नाहीं धन, वैभव व शरीर के द्वारा कोई भी ऊपर नहीं हो सकता लेकिन कर्मों के द्वारा हम अमरतत्व की प्राप्ति कर सकते हैं. इसलिए सतपुरूषों की शरणमें रहकर हम अपने कर्मों को सुधारने का निरन्तर प्रयास करते रहें.

२६ फरवरी आज गुरू का वार है, गुरूदेव सर्वानन्दजी महाराज का चारों तरफ आनन्द छाया हुआ है क्योंकि आज पाठों का भोग व भंडारा जो होने वाला है इस अवसर पर गुरू जी ने सन्देश दिया कि आछे दिन पाछे गए,कियो न हरि से हेत, अब पछताय होत के, जब चिड़िया चुग गई खेत हमारे जीवन का स्वर्णकाल बचपन व जवानी,बुद्धि तीक्ष्ण,स्मरणशक्ति अच्छी,इन्द्रियां प्रवल तब सोचते हैं कि यह कार्य तो बुढ़ापे का है अभी तो खूब पैसा कमा लें कुछ पैसा बचा ले तो बुढ़ापे में काम आयेगा, लेकिन जब बुढ़ापा आता है तो तृष्णाऐं बढ़ जाती हैं, इन्द्रियां क्षीण हो जाती हैं, आसन लगता नहीं, नाम जपने के लिए बैठा नहीं जाता. जैसे भगवान के मंदिर में जाते हो वहां पर चढ़ाने के लिए ताजे फूल खिलतां हुई कलियों सहित लेकर जाते हैं, मुरझाए फूल नहीं चढ़ाते वैसे ही प्रभु भक्ति के लिए कलियां व ताजे फूल अर्थात् बचपन व जवानी ही उत्तम है. मुरझाए हुए फूल अर्थात् बुढ़ापा हम कुछ नहीं कर सकेंगे.जरा उपाय न हो सके, जरा अवस्था के मांहि, भवसागर के तरू को, तरूण अवस्था आंहि तत्पश्चात् सन्त प्रतापलाल की माता साहिब की याद में श्रीमद् भगवदगीता का पाठ साहिब का भोग, आश्रम के उद्घाटन के उपलक्ष में श्रीमद् भगवदगीता व प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के भोग साहिब डाले गये तत्पश्चात् आरती व पल्लव पाकर सतगुरू महाराज ने सत्संग समाप्त किया.

सांयकालीन समापन सत्संगसभा में ग्वालियर से पधारी दादी लाजवन्ती ने गुजरी सा त गुजरी बाकी रहु रहत सां जैसे हमारे हाथ में एक ग्लास दूध से भरा हो, ठोकर लग गयी, हम गिर गये, आधा गिलास दूधका छलक गया बाकी आधा ग्लास बच गया तो उस आधे ग्लास दूध को हम बचायेंगे या उसको भी फैला देंगे. वैसे ही हमारा जितना जीवन बीता, जैसा भी बीता, बाकी जो जीवन बचा है उसको हम सतूमार्ग में लगायें. दिल्ली से पधारे सन्त जयदेवजी ने कुछ न बिगड़ेगा तेरा, गुरू शरण में आने के बाद, हर खुशी मिल जायेगी चरणों में झुक जाने के बाद अन्त में पूज्यश्री ने भी अपने अमृताशीष में कहा-मनके जितने भी विकार है जैसे काम, लोभ, मोह, अहंकार, मत्सर, क्रोध आदि वे सब संसार की नश्वरता का ध्यान करने पर मन से निकल सकते हैं. इक उतरी आन सवारी है,दूजी कर रही चलने की तैयारी है, यह दुनिया अद्भुत टेन्शन है, यहां रेल चले दिन राती है बिस्तर बांधकर तैयारी कर लो क्योंकि गाड़ी की सीटी हमें बार-बार सावधान करती है कि जिस गाड़ी में तुमको चढ़ना है वो तो पल छिन में स्टेशन पर आने वाली है. जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द जिस मृत्यु से संसार डरता है महापुरूषों ने उसे साधन बना लिया. काल नहीं वह मित्र है लावे सीधी राह गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने कहा है तुलसी [illegible] ने ऐसी सूझ पड़ी, नहीं भरोसा काल का, आगे मौत खड़ी तो गुरू कृपा के द्वारा हमें जीते जी उसका अनुभव हो जाता है जिसमें जीते जी मुक्ति सम्भव है. अन्त में पल्लव पाकर इस आश्रम के उद्घाटन व मूर्ति स्थापना प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पंच दिवसीय ज्ञान-यज्ञ का समापन किया.

आगरा २७ से २६ फरवरी

सत्संग समागम के साथ सामूहिक विवाहोत्सव

मुरैना प्रेम प्रकाश आश्रम का कार्यक्रम पूर्ण कर पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्त मण्डली सहित २७ फरवरी को आगरा महानगर में अमरापुर वाहन व अन्य वाहनों द्वारा प्रेमियों सहित आगरा प्रातः १० बजे पहुंचे. जहां अगवानी हेतु अपार जनसमूह उपस्थित था, बैंड बाजों के साथ ढोल बजाते हुए जय जयकार करते नाचते गाते प्रेमी पूज्य स्वामीजी को सजी कार में बिठाकर फूलों की वर्षा करते हुए लगभग ११:१५ पर केदारनगर आश्रम पर लाये. आश्रम पर दर्शन उपरान्त सत्संग पंडाल पर आकर मंचासीन हुए व ५६ बालक जो कि जनेऊ संस्कार से संस्कारित हुए बैठे थे पूज्य स्वामीजी का आशीर्वाद पाने हेतु. बच्चों को सुशिक्षित करते हुए आशीर्वाद पाखर टी शर्ट प्रदान की गई. आम भण्डारे में जनेऊ कार्य में सम्मिलित सभी परिवारों को भोजन प्रसादी करायी गई. सांयकाल विशाल जनसमूह सत्संग कीर्तन का लाभ लेने हेतु पधारे. विशालतम भव्य पंडाल में सौम्य सजावट से सजा हुआ विशाल मंच, जहां भगवान वैकुण्ठनाथ लक्ष्मीनारायण के साथ-साथ अर्चनीय वन्दनीय सतगुरू स्वामी टेऊँराम [illegible] महाराज की

मनमोहक झांकी सजी थी जो दूर-दूर से लोगों के मन को आकर्षित कर रही थी मानो कुंभ मेला का दृश्य था. रात्रि को सभी प्रेमियों के लिये आम भण्डारा व्यवस्था की गई थी.

दूसरे दिन प्रातःकालीन सत्संग समागम के पश्चात् प्रेम प्रकाश आश्रम केदारनगर द्वारा प्रथम बार आयोजित सिन्धी सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन भी आश्रम परिसर में किया गया था. दोपहर ११ बजे पं.मुरली शर्मा, पं.भरतलाल शर्मा, पं.दीपक कुमार शर्मा, पं. गुलाबराय शर्मा, पं.कमलेश शर्मा व पं.अनिल कुमार मथुरावासी द्वारा ६ अलग-अलग वेदियों पर ६ जोड़ों का (अंजू-सुशील, कविता-गोपालदास, ममता-वासदेव, जयश्री-जयप्रकाश, विजेता-मोहन, इन्दिरा-खेमचंद) गठबन्धन उच्च स्वर से वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ पूर्ण कराया. सदगुरू महाराजजी की पावन उपस्थिति व अमृताशीष की प्रफुल्लता नवयुगल दम्पतियों व उनके परिजनों के चेहरे पर स्पष्ट देखी जा रही थी. प्रत्येक कन्या को आश्रम की ओर से मंगलसूत्र सहित जीवनोपयोगी सामान लगभग १८ हजार रूपये का उपहार स्वरूप दिये गये. विवाह समारोह में आये सभी अतिथियों को प्रेम पूर्वक भोजन प्रसादी खिलाकर भी तृप्त किया गया.

सांयकालीन सत्संग सभा में सदगुरू महाराज जी व सन्त मण्डल द्वारा अमृतवर्षा की गयी इस अवसर पर सदगुरू महाराज जी ने प्रेमियों को अपनी अमृतमयी वाणी से सम्बोधित करते हुए बताया कि इस मनुष्य देह को सदैव सत्कार्यो सत्संग सेवा स्वाध्याय में लगाकर परमात्मा प्राप्ति की ओर गुरू कृपा व सन्तों के सानिध्य में अग्रसर रहना चाहिये. रात्रि को आम भण्डारे में ५ हजार से अधिक भक्तों ने भोजन प्रसादी पायी.

२९ फरवरी को प्रातः प्रभातफेरी कार्यक्रम में हरिनाम संकीर्तन की उच्च गूंज से क्षेत्र पावन हो उठा. शाम को ४ से ७ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम प्राचीन प्रेम प्रकाश आश्रम, गली गुलाबखाना कालामहल में हुआ सत्संगोपरान्त आम भण्डारे मे भी श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया. आगरा व समीपस्थ क्षेत्रों के हजारों प्रेमियों के अतिरिक्त पलवल, दिल्ली, जयपुर, पिनगंवा, भाटापारा, तिरोड़ा, बनारस, मनीला व सिंगापुर से भी प्रेमी आगरा सन्त समागम में सम्मिलित हुए. कार्यक्रमों का संचालन केदारनगर आश्रम पर सुश्री भगवन्ती देवी साजनानी व कालामहल आश्रम पर संत भगतप्रकाशजी ने किया.डबरा से सुबह लगभग ७:१५ बजे मुरैना के लिए अमरापुर वाहन से रवाना हुए

अलीगढ़ १ से २ मार्च

सुबह लगभग ७ बजे आगरा से अमरापुर बस द्वारा रवाना होकर रास्ते में प्रेमियों के घरों को पवित्र करते हुए १० बजे अलीगढ़ प्रेम प्रकाश आश्रम पर पहुंचे. बैंड बाजों व जयकार धुनि लगाते प्रेमी पुष्पों की वर्षा करते आनन्दित हो रहे थे जैसे १४ साल के बाद राम वापिस अयोध्या में लौटे हैं. पहुंचते ही सत्संग आरम्भ हुआ. स्वामीजी ने कहा कि गोविन्द का नाम मधुर व मीठा है पर कब, जब आप उसे मन में सच्चा प्रेम जगाकर जपेंगे. हमारे पास नाम तो है पर प्रेम नहीं है इसलिए नाम जपने में आनन्द नहीं आता. मन को विषय वासनाओं से हटाने की कोशिश करेंगे तो प्रेम अपने आप प्रकट होने लगेगा.

सांयकालीन सत्संग में पूज्यश्री ने कहा कि हम ऐसा धन इकट्ठा करने में लगे हुए हैं जो एक दिन चोर लूट कर ले जायेंगे या पड़े-पड़े दब जायेगा, खराब हो जायेगा, कोई बेईमानी करके छीन ले जायेगा. ये सांसारिक पदार्थ तो प्रारब्ध के अनुसार हमें मिलते रहेंगे व बिछुड़ते भी रहेंगे लेकिन हमें ऐसा धन इकट्ठा करना है जो हमको परलोक में काम आए,क्योंकि धन इकट्ठा करने में हमारी स्वासों की पूंजी तो लगातार खत्म होती जा रही है. चाहे सांसारिक धन इकट्ठा करें चाहे पारमार्थिक धन. सत्पुरूषों की शरण में आकर हमें ज्ञान मिलता है कि जब सांसारिक पदार्थ प्रारब्ध के अनुसार मिलेगें तो उनके लिए स्वांसोरूपी पूंजी लुटाकर हम भारी भूल कर रहे हैं उन्ही स्वांसो द्वारा हम नाम-जप करके सच्चा धन इकट्ठा करने में जुट जाएं.

२ मार्च आज आमलकी एकादशी का पवित्र दिवस है. सुबह ६ बजे ब्राह्मण देवता द्वारा हवन कराने के पश्चात् पूज्य सद्गुरू महाराजजी ने सत्संग में कहा कि मनुष्य जन्म पाकर तुमने न तो शुभकर्म किए, न कोई जाप, न दान-पुण्य, न किसी सत्पुरूष की शरण ली, देव दुर्लभ शरीर संसार के बड़े-बड़े कामों को करने में लगा दिया जब आंखे खुली तो मालूम पड़ा कि जिस काम को करने के लिए प्रभु ने संसार में भेजा वो तो किया ही नहीं लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी है अब भी कुछ नहीं बिगड़ा अपने मन को जगा कर सतकर्मो में लगाकर प्रभू प्राप्ति का उपाय करेंगे तो सांसारिक बन्धनों से मुक्ति पा सकते हैं.

सांयकालीन सत्संग ७ बजे तक चला. यह जयपुर अलीगढ़ तक की यात्रा का अन्तिम सत्संग था इसमें उन्होने आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य श्री ने इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, धन धाम आदि की इच्छा न रखते हुए हरि से केवल नाम की याचना की क्योंकि पुण्य क्षीण होने के बाद स्वर्गलोक से भी वापस मृत्युलोक में आना पड़ता है इसलिए ऐसे पदार्थो की कामना जिसके बाद फिर वापिस आना पड़े इससे तो अच्छा है कि नाम स्मरण करके जैसे नदी का पानी सागर में समाकर विश्राम पाता है उसी प्रकार हम भी प्रभू परमात्मारूपी सागर में समाकर उस परमानन्द की प्राप्ति करें. प्रेम की महिमा व परम शान्ति में लीन होने का सन्देश देते हुए पूज्य श्री द्वारा हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया गया. जहां लगभग १:३० बजे दोपहर गंगा मैया के पावन दर्शन करते हुए श्री प्रेम प्रकाश आश्रम भूपतवाला पहुंचे.

हरिद्वार ३ से १० मार्च

इस सप्ताह गुरू महाराजजी गंगामैया के पावन तट पर संतमण्डलीके साथ प्रेम प्रकाश आश्रम पर रहे. होली उत्सव भी यहीं पर मनाया गया.

दिल्ली ११ से १३ मार्च

मलकागंज आश्रम में प्रेमियों को भगवत नाम का अमृत रस पिलाते हुए १४ मार्च प्रातः ११ बजे रेलमार्ग द्वारा गांधी धाम के लिए प्रस्थान हुआ.



श्री अमरापुर समाचार

बम-बम भोले के साथ महाशिवरात्रि महोत्सव सम्पन्न

भूतभावन भस्मधारी अंग-नंग-धड़ंग, भोलेबाबा की महाशिवरात्रि महोत्सव पूरे भारत वर्ष के हर शिवालयों में बड़े ही भक्तिमय वातावरण के साथ मनाया गया. कहीं भंग तो कहीं दूध दही विल्वपत्र व पंचामृत द्वारा अभिषेक और कहीं-कहीं पर तो मुर्दे की भस्म लगाकर भी भोले भण्डारी को प्रसन्न किया गया.

बाबा का जीवन भी कुछ अलग ही है. सबसे भिन्न शरीर पर भस्म, गले की मुंड व सर्पों की माला, मृग की छाल रूपी वस्त्र, बैल की सवारी, रहने का स्थान श्मशान, पीने को भंग का प्याला, अंग-नंग-धड़ंग यत्र-तत्र डमरू लिये घूमना ऐसे विचित्र है भगवान शिवजी.

आविर्भाव दिवस अथवा विवाह संस्कार दिवस महाशिवरात्रि महोत्सव सम्पूर्ण विश्व में सश्रद्धा भक्ति भाव के साथ मनाया गया. पावन श्री अमरापुर धाम जयपुर में प्रातःकाल से ही भक्तिमय स्वर में बम-बम भोले की गूंज चहुं ओर सुनाई दी जाने लगी. मनमोहक नील कण्ठधारी बाबा की आकर्षक सभी सुन्दर झांकियां लोगो को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी. मन्दिर में स्थित श्री अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर को कपास से हिमालय पर्वतनुमा व उनके मस्तक से गंगा प्रवाहित हो रही थी मानो स्वंय गंगा यहां अवतरित हो रही हो. मन्दिर के पास एक नन्ही सी सुन्दर झांकी जिसमें साक्षात कैलाश में विराजमान भगवान शंकर दर्शनीय थे. प्रातःकाल से रात्रिकाल तक श्रद्धालु कतारबद्ध होकर भोले बाबा को बिल्वपत्र, बैर, पंचामृत, दुग्धाभिषेक आदि द्वारा पूजा अर्चना कर प्रसन्न कर रहे थे.

प्रतिवर्ष की भांति प्रातः ७ से ९ बजे तक पुजारी प्रतापराम, संत दयाप्रकाश, भगत भोजराज, भगत चुन्नीलाल, संत नरेश एवं संत श्री मोनूराम जी द्वारा भगवान की महिमा का गुणगान किया गया. ९ से ९:३० बजे तक पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की प्रवचन कैसेट शंकर **भोले पार्वती सुन अमर कथा सुखदानी** चलाई गई.

समयनुसार ९:३० से १०:३० एक घण्टे की परिधि में सन्त श्री द्वारा वैदिक मत्रोच्चारण कर हवन किया गया तत्पश्चात् मन्दिर में स्थित श्री अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर के गुम्बज पर नरियल-मिश्री द्वारा पूजनकर हम गीत सनातन गायेंगे आदि वन्दना के साथ पुजारी प्रतापराम जी व संत श्री ने ध्वजा स्थापित किया. उनके बाद भगवान के मन्दिर में बेर, विल्वपत्र, गाजर, दुग्ध आदि के साथ पूजा अर्चना की गई. इसी के साथ ११ बजे विशाल भण्डारे में हजारों श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी ग्रहण की इसी के साथ महाशिवरात्रि महोत्सव सम्पन्न हुआ. दीपक मनवानी जयपुर

ब्यावर में भी मनाया गया महाशिवरात्रि पर्व

ब्यावर- प्रेम प्रकाश आश्रम नन्दनगर में शिवरात्रि पर्व धूम धाम से मनाया गया जिसके अंतर्गत प्रातः ७ बजे से १० बजे तक सत्संग एवं हवन का कार्यक्रम हुआ. भगवान शिव शंकर की आकर्षक झांकी सजायी गयी. सांय ५ बजे से ६:३० तक सत्संग का कार्यक्रम हुआ एवं रात्रि को ८ दजे से १२ बजे तक भक्ति-संध्या का कार्यक्रम रखा गया जिसमें वड़ी संख्या में भक्तों द्वारा सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं भगवान शिव शंकर की महिमा के सुन्दर भजन प्रस्तुत किये गये हजारों प्रेमी भक्तिरस में डूब गये व आनन्द प्राप्त किया. नानकराम (ब्यावर से)

हांगकांग में भी शिवरात्रि महापर्व मना

कांवलान हांगकांग में स्थापित प्रेम प्रकाश मंदिर में सन्त नामदेव जी महाराज के सानिध्य में महाशिवरात्रि पर्व को वहां रह रहे भक्तों ने बड़े प्रेम-श्रद्धा व विश्वास के साथ विविध कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया

सन्तों के संग होरी खेलो-पिवो प्रेम प्याला रे

रंग-गुलाल कुंगू केसर से गुलाबी हुआ श्री अमरापुर धाम

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय श्री अमरापुर धाम जयपुर जो कि गुरूधाम होने के कारण नित्य ही उत्सवमयी रहता है. यहां के भक्तों के प्रेमोल्लास का तो कहना ही क्या,उल्लासमयी वातावरण में सत्संग-सेवा-दर्शन के त्रिवेणी में स्नान करते हुए असंख्य श्रद्धालुओं ने असत्य पर सत्य की विजय व भक्ति का प्रतीक होली महोत्सव सन्त मोनूराम जी व उपस्थित अन्य सन्त महापुरूषों की उपस्थिति में मनाया. सदगुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की अमृतवाणी की कैसेट द्वारा अमृतोपदेश श्रवण करते हुए होली पर्व पर मांस-मदिरा इत्यादि अभक्ष्य वस्तुओं से दूर रहने का संकल्प लिया. इस अवसर पर विशेष सजे हुए प्रकोष्ठ में इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण व आचार्यश्री एवम् सदगुरू महाराज की मूर्तियों को पुष्पों की सजावट के साथ विराजित किया गया था. सन्त मण्डली व भक्तों ने सद्गुरू महाराज जी को केसर चन्दन का तिलक करते हुए परस्पर एक दूसरे को प्रेमपूर्वक होली गुलाल का टीका लगाकर शुभकामनाए दीं.

।। गुरू की महिमा वेद न जाने-जेता सुने, तेता बखाने ।।

दादा गुरू सांई आसूराम जी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई

खैरथलः- गुरू की महिमा जितनी गायें उतनी कम है, उन महापुरूष की छत्र छाया में हम सब फल-फूल रह हैं. उनकी कृपा दृष्टि न होती तो आज हम कहाँ होते. कहा गया है कि- किसी काम के थे नहीं-छुता नहिं को छांव, कृपा भई गुरूदेव की-तो पुजन लागे पांव..

यह सब उन महापुरूषों की कृपा मात्र है. जिन्होंने हमें जीवन जीने की कला दी और हमारा मार्ग प्रशस्त किया. ऐसे प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गुरू परम श्रद्धेय दादा गुरूदेव सांई आसूराम जी महाराज की पुण्य तिथि महोत्सव टीले के ऊपर प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल में ६-१० फरवरी को संतों के पावन सानिध्य में मनाया गया. प्रत्येक वर्ष की भांति पंचदिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब के पाठों के साथ वर्सी उत्सव का शुभारम्भ हुआ.

उत्सव के अन्तर्गत ६ फरवरी को सायं ५ से ६ बजे तक कालोनी में 'संकीर्तन यात्रा' निकाली गई. जिसमें तीन चौपहिये वाहनों को बड़े ही सुन्दरता के साथ श्रृंगारित किया गया. जिसमे दादा सांई आसूराम जी महाराज सांई टेऊँराम जी महाराज की मनभावन प्रतिमायें विराजमान की गई, अग्र भाग में संत श्री मुरलीधर (खैरथल), संत श्री मोनूराम जी, संत परसराम, संत राजा, संत राममुक्त, विद्यार्थी गण व विभिन्न ग्रामीणों के भक्तजन संकीर्तन करते चल रहे थे. अबाध गति से चलने वाले संकीर्तन की समाप्ति के पश्चात पुनः आश्रम पर सत्संग व आरती का कार्यक्रम हुआ. इसी प्रकार १० फरवरी को प्रातः ८ बजे प्रार्थना सत्संग, पाठों का भोग साहब हुआ. तत्पश्चात् वैदिक मंत्रोंच्चारण के साथ विद्वान ब्राह्मणों के द्वारा हवन (यज्ञ) हुआ. अंत में विशाल भण्डारे में हजारो श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी ग्रहण की. सांय ५ से ७ बजे तक भजन-सत्संग हुआ जिसमें सन्तों ने गुरू की महिमा का व्याख्यान किया. शिष्य भी ऐसे होने चाहिये जो गुरू की चहुं ओर कीर्ति फैलाएं. स्वामी आसूराम गुरू ज्ञानी था वो तो संत सच्चा लासानी था महापुरूषों की भक्ति कभी व्यर्थ नहीं जाती, समय पाकर अवश्य ही फलीफूल होती है. अंत मे पल्लव व आरती के साथ पुण्यतिथि महोत्सव श्रद्धा हार्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ. उत्सव में मुंडावर, जड़ोदा, मतोर, ईस्माइलपुर, किशनगढ़ बास, तिजारा, मोटूगांव, आदि ग्रामीण क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भाग लिया.

अमरापुरवासी

अमरावती-प्रेम प्रकाशसंदेश परिवार के सदस्य अमरावती प्रतिनिधि श्री नारायणदास तेजूराम हेमराजानी जी के नाती २० वर्षीय राजा वलेचा जो की सी.ए का कोर्स कर रहा था १४ दिसम्बर २००३ को कुछ साथियों के साथ पिकनिक पर गया, जहां पर खेलते खेलते गेंद पानी में जाने से दो साथी पानी में डूबने लगे तो राजा ने एक मित्र को खींचकर बाहर निकाला दूसरे को निकालने के लिये जैसे ही उसने अपना हाथ बढ़ाया तो वह भी पानी में खिंचा चला गया और अपने मित्र के साथ अमरापुरवासी हुआ. यह दुखद खबर नन्दुरबार में उसके पिता श्री गोपीचंद वलेचा जी ने अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में सुनी तो वह भी हृदयाघात से अमरापुर धाम सिधारे. नन्दुरबार व अमरावती के शोक संतप्त नागरिक१५ दिसम्बर को श्री नारायणदास जी के दामाद व नाती के अन्तिम यात्रा में बड़ी संख्या मे सम्मिलित हुए. सदगुरू महाराज जी ने भी श्री नारायणदासजी को फोन पर ढाँढस देते हुए दिवगंत आत्माओं की शान्ति के लिये प्रभू परमात्मा से प्रार्थना की.

ग्वालियर-प्रेम प्रकाश संदेश के सम्पादक श्री शंकरलाल सबनानी जी के पिता श्री अमुलदास सबनानी जी ६४ वर्ष की आयु पूर्ण कर १६ फरवरी २००४ को प्रातः१० बजे सद्गुरू महाराज के चरणों में सर्वदा के लिये अमरापुर धाम सिधारे. प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के संस्थापक सदस्य आचार्यश्री से दीक्षा प्राप्त भाग्यशाली अमरापुरवासी श्री अमुलदासजी १७ फरवरी को उनके स्वास्थ्य जानकारी लेने के लिये पधारे पूज्य सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज से अन्तिम बार सत्नाम साक्षी कर मौन साधना में दो दिन रहे. १६ फरवरी को दादा जी की अन्तिम यात्रा में सद्गुरू महाराज जी भी सन्तमण्डली सहित सम्मिलित हुए.

जयपुर- श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के कमर्ठ गुरू के प्यारे सेवादारी श्री गोविन्दराम केसवानी १ मार्च २००४ सोमवार को श्री अमरापुर धाम सिधारे. वे लगभग ६० वर्ष के थे. उनका सेवा कार्य सदैव स्मरणीय रहेगा. श्री गोविन्दरामजी हरिद्वार मेला कुंभ आदि मेला आयोजन के टिकट की सेवा तन्मयता के साथ किया करते थे.

श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, भजन मण्डली, महिला मण्डल व प्रेम प्रकाश संदेश परिवार की ओर से गुरू महाराज से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में निवास दे.

आयोजन आमंत्रण इन्दौर में

स्वामी मुरलीधरजी महाराज, स्वामी गंगारामजी महाराज, स्वामी चेतनप्रकाशजी महाराज का वर्सी उत्सव

गुरूवार 8 अप्रेल से सोमवार 12 अप्रेल 2004 तक

गुरूवार 8 अप्रेल 2004	शुक्रवार 9 अप्रेल 2004	शनिवार 10 अप्रेल 2004	रविवार 11 अप्रेल 2004	सोमवार 12 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग, हवन, ध्वजावंदन और पाठों का आरम्भ सायं 4 से 7 बजे तक सत्संग	प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग सायं 4 से 7 बजे तक सत्संग	प्रातः 6 बजे स्थापित प्रतिमाओं का अभिषेक, पोशाक पहरान प्रातः 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक सत्संग दोपहर 12 बजे पूज्य (भेख मंडल) सिंधी साधुसमाज का भोजन	प्रातः 5 बजे प्रभातफेरी प्रातः 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक सत्संग दोपहर 11 बजे संतो का भोजन	प्रातः 8 से 11 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग एवं आम भण्डारा सायं 4 से 7 बजे तक सत्संग सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा पल्लव पाकर उत्सव का समापन

आयोजन स्थलः- स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रम, ४-कॉटजू कॉलोनी, इन्दौर फोनः-०७३१-२४६८१४०, ६४२५०-५३६८२

श्री अमरापुर स्थान वर्ष 2004–2005 सम्वत् 2061–62 प्रेम प्रकाश संदेश

पर्व–उत्सव

चैत्र मेला 29 अप्रेल से 3 मई, 04 उज्जैन में	जन्मोत्सव	वर्सी उत्सव
सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज	19 से 23 जून	20 से 24 मई
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज	23 से 27 अक्टूबर	17 से 21 अगस्त
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज	26 से 30 अगस्त	1 सितम्बर
सद्गुरू हरिदासरामजी महाराज	4 मई	6 से 10 सितम्बर

22 मार्च– चेटीचण्ड, भगवान झूलेलाल जयन्ती
30 मार्च– रामनवमी
15 अप्रेल से 4 मई तक– कुम्भ मेला, उज्जैन
28 अप्रेल– सांई गुरमुखदास वर्सी उत्सव
29 अप्रेल से 3 मई– चैत्र मेला, उज्जैन
4 मई– सांई हरिदासराम जन्मोत्सव

24 मई– सांई टेऊँराम बाबा वर्सी उत्सव
23 जून– सांई टेऊँराम बाबा जन्मोत्सव
2 जुलाई– गुरू पूर्णिमा
21 अगस्त– सांई सर्वानन्द वर्सी उत्सव
30 अगस्त– सांई शांतिप्रकाश जन्मोत्सव
30 अगस्त– रक्षाबंधन, नारियल पूर्णिमा
1 सितम्बर– सांई शांतिप्रकाश पुण्यतिथि
7 सितम्बर– श्री कृष्ण जन्माष्टमी
10 सितम्बर– सांई हरिदासराम पुण्यतिथि
23–27 अक्टूबर– सांई सर्वानन्द जन्मोत्सव, हरिद्वार मेला
12 नवंबर– दीपावली
14–26 नवंबर– कार्तिकोत्सव, अमरापुर स्थान जयपुर

प्रेमप्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी) उज्जैन महाकुम्भ पर्व 15 अप्रेल से 4 मई 2004

19 नवंबर– गोपष्टमी
20 नवंबर– आंवला नवमी
22 नवंबर– हरि प्रबोधनी एकादशी
26 नवंबर– कार्तिक पूर्णिमा, गुरूनानक जयंती
14 जनवरी 05– मकर संक्रांति
13 फरवरी– बसंत पंचमी
9 मार्च– महाशिवरात्रि
25 मार्च– होली दहन
26 मार्च– धुलण्डी
10 अप्रेल– चेटीचण्ड, भगवान झूलेलाल जयंती
21 अप्रेल– सांई गुरूमुखदास पुण्यतिथि
22–26 अप्रेल– चैत्र मेला जयपुर (2005)

आयोजन आमंत्रण दिल्ली में

श्री प्रेम प्रकाश धाम का वार्षिक महोत्सव

शनिवार २७ मार्च से बुधवार ३१ मार्च २००४ तक

कार्यक्रम

शनिवार
27 मार्च 2004
प्रातः 8 से 10 बजे तक
सत्संग, हवन, ध्वजावंदन
सायं 4 से 8 बजे तक
श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ
श्रीमद् भगवतगीता
के पाठ आरंभ, सत्संग

रविवार
28 मार्च 2004
सायं 4 बजे प्रेम प्रकाशधाम
से भव्य शोभायात्रा निकलेगी
जो मलंकागंज, पुरानी सब्जी
मण्डी, घण्टाघर से होते हुए
वापस आश्रम पहुंचेगी

सोमवार
मंगलवार
29—30 मार्च 2004
प्रातः 8 से 10 बजे तक
भजन—गायन
सत्संग—प्रवचन

बुधवार
31 मार्च 2004
प्रातः 6 बजे
स्थापित प्रतिमाओं का अभिषेक
प्रातः 8 से 10 बजे तक
सत्संग—प्रवचन

बुधवार
31 मार्च 2004
सायं 4 से रात्रि 10 बजे तक
पाठों का भोग–सत्संग–प्रवचन
सदगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी
महाराज के अमृताशीष वचनों
व पल्लव द्वारा महोत्सव का समापन

आयोजन स्थल : श्री प्रेम प्रकाश धाम, सी–२/३७–३८ मल्कागंज, दिल्ली–११०००७
दूरभाष : ०११–५५१९६१३८, २३६६६७७४, २३६४२१२६

रतलाम में नवनिर्मित श्री प्रेमप्रकाश आश्रम का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह

गुरूवार 1 अप्रेल से सोमवार 5 अप्रेल 2004 तक

कार्यक्रम

गुरूवार
1 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 11 बजे तक
मूर्ति पूजन, हवन
श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ
श्रीमद् भगवतगीता
के पाठ आरंभ, सत्संग
सायं 5 से 7 बजे तक
सत्संग—प्रवचन
शुक्रवार 2 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 10 व
सायं 5 से 7 बजे तक
सत्संग

शनिवार
3 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 10 व
सायं 5 से 7 बजे तक
सत्संग
प्रातःकाल सत्गुरू स्वामी
भगतप्रकाशजी महाराज का
आगमन तत्पश्चात् हवन व
भगवान एवं गुरू महाराज
के स्वरूपों का मूर्ति दर्शन

रविवार
4 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 10 व
सायं 5 से 7 बजे तक
सत्संग

सोमवार
5 अप्रेल 2004
प्रातः 8 से 12 बजे तक पाठों
का भोग, सत्संग, ध्वजावंदन
और आम भण्डारा
सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग,
सतगुरू महाराज व सन्त मण्डली
पल्लव पाकर उत्सव का समापन करेंगे

पताः– स्वामी टेऊँराम, प्रेम प्रकाश आश्रम, केशव विहार कॉलोनी, शास्त्री नगर, रतलाम

साँई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ चित्रकथा-2

चित्रांकन, लेखन-सुधा जौहरी, जयपुर



दिमागी कसरत

आध्यात्मिक वर्ग पहेली क्रं.- 5

1		2	3		ॐ	4	5
	ॐ	6		ॐ	7		
8	9		ॐ	10	ॐ	ॐ	
ॐ		ॐ	11		12		
13				ॐ		ॐ	ॐ
14		ॐ	ॐ	ॐ	15		16
	ॐ	17	ॐ	18		ॐ	
19				ॐ	ॐ	20	

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-4 का सही हल

1 उ	ज्ज	2 यि	नी	ॐ	3 प्रे	र	4 क
च्चा	ॐ	या	ॐ	5 रा	ग	ॐ	न्त
र	ॐ	6 सु	ख	ॐ	7 प्र	8 ती	क
ण	ॐ	ॐ	ॐ	9 दु	का	न	ॐ
ॐ	10 सि	11 त	म	ॐ	श	ॐ	12 इ
13 ब	न्धु	त्व	ॐ	ॐ	14 म	न्दू	क
15 दी	न	ॐ	16 ब्र	ह्मा	ण्ड	ॐ	ता
ॐ	दी	ॐ	ह्मा	ॐ	ल	ॐ	रा

सही हल के लिए आगामी अंक देखें - सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर 5 अप्रेल तक कार्यालय में भिजवायें. प्रेम प्रकाश संदेश

प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर - 474001

आध्यात्मिक वर्ग-पहेली

बाएँ से दाएँ-

१.नई मूर्ति स्थापित कर उसमें मंत्रों द्वारा प्राण फूँकना. (२.३)
४.राजा जनक लव-कुश के ....थे,मां के पिता (२)
६.कुम्भ मेला इस ....उज्जयिनी में सम्पन्न होगा, वर्ष (२)
७.गुफा जहां या तो हिंसक पशु रहते हैं या तपस्वी सन्यासी साधना करते हैं.(२)
८.तीनों लोकों में विचरण करने वाले देवर्षि. (३)
११.महाभारत युग की सर्वाधिक लज्जापूर्ण घटना.(२.३)
१३.सत्य नैतिकता पूर्ण आचार-विचार व व्यवहार.(४)
१४.भजन जहां हों वहां भक्ति...........की सरिता बहती है.(२)
१५.श्री कृष्ण.............युग में हुए.(३)
१८.विष्णु भगवान..........सागर में शयन करते हैं.(२)
१९.पुष्कर (अजमेर) को सर्वोपरि पावन स्थल कहा जाता है.(४)
२०.सांवला वर्ण होने के कारण कृष्ण कहलाते हैं.(२)

ऊपर से नीचे-

१.ईश्वर अथवा अन्य देवता की स्तुति अथवा उनसे चाहा गया अनुग्रह.(३)
२.देवता को अर्पण हुए भोग का भाग.(३)
३.मकर संक्रांति को.........दान करते हैं(२)
४.ध्वनि, इसके दो रूप हैं, आहत एवं अनाहत; आवाज.(२)
५.ईश्वर; भगवान, श्री के पति, सृष्टि के पालनहार (४)
९.एक चर्मकार जो भक्त थे व कवि थे.(४)
१०.ब्रह्माजी के मुखों की संख्या, युगों की संख्या (२)
११.कृष्ण स्नान करती गोपियों के.......लेकर वृक्ष पर जा बैठे, वसन(२)
१२.गंगा तट पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ.(४)
१३.ब्रह्माजी की पत्नी, मां शारदा. (४)
१६.राम कहो या ...., एक ही बात है, मुस्लिम कवि (३)
१७.कृष्ण की अनन्य भक्त महिला जिनके हाथ में विष का प्याला अमृत दन गया.(२)

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

आध्यात्मिक वर्गपहेली-४ (सही हल भेजनें वालों के नाम-)
जयपुर से-आशा रामवानी,दीपक मनवानी,मालादेवी टिलवानी,यशिका बच्वानी,हितेश प्रकाश पमनानी,राजेश केसवानी,इन्दौर से-हरीश बालानी,अजमेर से-श्रीमती आशा शहानी,कामठी से-रवि मुलानी,डॉ.अनिल गिरधारीलाल मंगतानी,ब्यावर से-मनीश,मीना,संगीता,वर्षा वासवानी,ग्वालियर से-कु.पूनम पंजवानी,भानुप्रतापपुर से-मायादेवी प्रेम प्रकाशी,खैरथल से-शालू,हेमलता प्रेम प्रकाशी,रूपा नोतानी,नीतू-लता तलरेजा,ज्योति आढ़तानी धमतरी से-पुरूषोत्तम निशा वशानी,प्रकाश नेहा वशानी,जया अहूजा,सोनल वाधवानी,एकता वाधवानी,सुशीला गोधूमल हिन्दूजा,श्रीमती रेखा किशोर वाधवानी,श्रीमती राधा चावला,सुरेश पंजवानी,श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी,सिवनी से-दीपा रामचंद माखीजा,रेनू श्यामसुंदर माखीजा,दीपा इन्द्रलाल मोहनानी,श्रीमती पुष्पा मोहनानी,कु.गीता गुरनानी

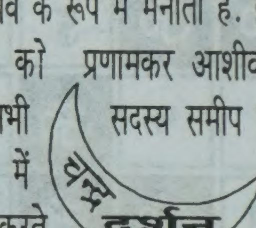


श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

15 मार्च से 18 मार्च	2004 तक	गाँधीधाम	✆ 02836-231612, 220320
19 मार्च	2004	अहमदाबाद	✆ 094140-41864, 098290-14850
20 मार्च	2004	उज्जैन	✆ 094140-41864, 098290-14850
21 मार्च से 26 मार्च	2004 तक	जयपुर	✆ 0141-2372424, 2372423
27 मार्च से 31 मार्च	2004 तक	दिल्ली	✆ 011-23969774, 23942126
2 अप्रैल से 4 अप्रैल	2004 तक	रतलाम	✆ 07412-240229, 243471
5 अप्रैल से 7 अप्रैल	2004 तक	उज्जैन	✆ 094140-41864, 098290-14850
8 अप्रैल से 12 अप्रैल	2004 तक	इन्दौर	✆ 0731-2468140
13 अप्रैल से 5 मई	2004 तक	उज्जैन	✆ 094140-41864, 098290-14850
6 मई	2004	यात्रा	✆ 094140-41864, 098290-14850
7 मई से 8 मई	2004 तक	फैजाबाद	✆ 05278-246159
9 मई से 11 मई	2004 तक	वाराणसी	✆ 0542-225585
12 मई से 13 मई	2004 तक	इलाहाबाद	✆ 0532-2655214
14 मई से 16 मई	2004 तक	कानपुर	✆ 0512-2215747
17 मई से 18 मई	2004 तक	लखनऊ	✆ 0522-2211901
19 मई	2004	दिल्ली	✆ 011-23969774, 23942126
20 मई से 23 मई	2004 तक	अजमेर	✆ 0145-2441850, 2440279

तीज त्यौहार

20 मार्च 2004	शनिवार	अमावस्या
21 मार्च 2004	रविवार	गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रा शुरु विक्रम संवत् 2061 शुरु, नववर्ष की शुभकामनाएं
22 मार्च 2004	सोमवार	चन्द्रदर्शन, चेट्री चंड, झूलेलाल जयंती
24 मार्च 2004	बुधवार	श्री गणेशचतुर्थी व्रत
26 मार्च 2004	शुक्रवार	सद्‌गुरू टेऊँराम चौथ
29 मार्च 2004	सोमवार	श्री दुर्गाष्टमी
30 मार्च 2004	मंगलवार	श्री रामनवमी,भगवान राघवेन्द्र सरकार जयंती
1 अप्रेल 2004	गुरूवार	कामदा एकादशी व्रत
4 अप्रेल 2004	रविवार	सत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत
5 अप्रेल 2004	सोमवार	श्री हनुमान जयंती
8 अप्रेल 2004	गुरुवार	श्री गणेशचतुर्थी व्रत
13 अप्रेल 2004	मंगलवार	मेष संक्रान्ति
15 अप्रेल 2004	गुरुवार	वरूथिनी एकादशी व्रत
19 अप्रेल 2004	सोमवार	सोमवती अमावस्या
21 अप्रेल 2004	बुधवार	चन्द्रदर्शन
22 अप्रेल 2004	गुरुवार	अक्षयतृतीया (अखण ट्रीज)
23 अप्रेल 2004	शुक्रवार	श्री गणेशचतुर्थी व्रत



सिंधी समाज प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रदर्शन को एक पर्व के रूप में मनाता है. इस दिन घर के बड़े-बूढ़ों और गुरूजनों को प्रणामकर आशीर्वाद लिया जाता है तथा परिवार के प्रायः सभी सदस्य समीप के मंदिर में या श्री गुरु महाराज के चरणों में जाकर पूजा अर्चना और सत्संग इत्यादि किया करते हैं. यह पर्व सायंकालीन होने के साथ ही भगवान आशुतोष की स्मृति भी कराता है; क्योंकि भगवान शिवजी के मस्तक पर शुक्लपक्ष द्वितीया के ही चन्द्र के विराजित होने का शास्त्रों में वर्णन किया गया है. चैत्र शुक्ल द्वितीया को 'चेटीचण्ड' के रूप में मनाकर सिंध-नववर्ष का श्रीगणेश किया जाता है. यह दिन श्री वरूणदेव भगवान झूलेलाल की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है. इस अवसर पर यत्र-तत्र जल-कलश के साथ प्रज्जवलित दीप अर्थात् जल और ज्योति के पूजन का प्रावधान हुआ करता है; क्योंकि ये दोनों ही मानव जीवन के सारभूत तत्व हैं.

सेवा-पथ

दूसरों के लिए भी कुछ करें

सम्पन्न लोगों को सर्वहारा वर्ग के लिए भी कुछ करने की सलाह दे रहे हैं सेवाभावी श्री एस.एल.ग्रोवरजी जयपुर से

आप में से अधिकांश किस्मत के धनी, मुकद्दर के सिंकदर होगें परन्तु दिल के धनी और दिल के सिकन्दर कितने हैं, यह कह पाना अत्यन्त कठिन है. यदि प्रभु ने आपको सामर्थ्यवान बनाया है तो खुद धूप में तपकर भी दूसरों को छाया दो. आप फलों से लदे हुए वृक्ष होते हुए भी अगर अपने फलों से दूसरों को लाभान्वित नहीं करते तो धिक्कार है. कबीर साहब ने ठीक ही कहा है किः-

बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर.
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर..

अगर किसी दुःखी की सेवा का मौका हाथ लगे तो उसे हाथ से न जाने दो, उसे कल पर मत टालो. धन तो आपको हर रोज ही प्राप्त हो जायेगा परन्तु सेवा के अवसर बार-बार नहीं मिलते. अगर आप बड़े हैं और सामर्थ्यवान हैं तो उदार बनिये और साथ-साथ जरूरतमंदों, निर्धनों और दुःखियों के लिए सुलभ भी बनिये. हो सके तो थोड़े से पैसे हमेशा हर वक्त अपनी जेब में रखें, ना मालूम कब, कहां, किस वक्त, किस मुसीबत में आप किसके काम आ जायें, किसका कष्ट दूर करने में सक्षम हो जायें और किस दुखियारे का कष्ट निवारण कर उसकी हजार-हजार दुआऐं अपने थोड़े से, छोटे से त्याग के बदले पा जायें और आपका यह पुण्य कब कहां आपके लिये ढाल बन जाये कुछ पता नहीं.

अमीर आदमी आगे आने वाले कष्टों (रेनीडे) के लिए न भी बचाये तो भी उसकी मोटी कमाई में से निरंतर कुछ न कुछ बचता ही चला जाता है और बैंक बैलेंस भी अपने आप ही ऊँचा होता जाता है, लेकिन निर्धन व्यक्ति दिन भर पूरे परिवार सहित भरपूर मेहनत करके भी दो वक्त का रूखा सूखा खाना बड़ी मुश्किल से जुटा पाता है और जब उसके परिवार में कोई विपदा या बीमारी आ जाती है तो वह बेचारा मोटे (पठानी) ब्याज-पर कर्ज लेकर कोरे कागज पर अंगूठा लगाकर या हस्ताक्षर करके अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी को साहुकार का कर्जदार बनाकर कर्ज चुकाता चला जाता है. गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी, मनोरंजन का अभाव, अधिक बच्चे कुपोषण और बीमारियां, निर्धन व्यक्ति को अपने चक्रव्यूह में ऐसे जकड़ते हैं कि वह बेचारा जीते जी सुख और सम्पन्नता देख ही नहीं पाता. हर सम्पन्न व्यक्ति की अमीरी में अनगिनत गरीबों की मेहनत, कुर्बानी व खून पसीना लगा हुआ है. गरीबों के कपड़ों और पसीने से अमीरों को बदबू आती है लेकिन उनके खून-पसीने से जो ऐशो-आराम उन्हें सुलभ (प्राप्त) होते हैं उनसे तो उन्हें कभी भी घृणा नहीं होती?

आपका परिवार, रिश्तेदार तथा दोस्त-मित्र, बिना आपकी कोई विशेष सेवा किये ही आप से आपका सबकुछ धीरे धीरे लेते ही चले जाते हैं और मरते वक्त आपके मन में यह भाव आये बिना नहीं रहता कि जिस मोह-माया व कंचन-कामिनी के पीछे जीवन भर आप निरंतर दौड़ते ही रहे अब उसमें से कुछ भी और कोई भी साथ नहीं जा रहा. भारी बोझल मन और अशान्त भाव, मौत को कितना दुखदायी बना देते हैं? हलका, अफुर व अभय होकर शान्त भाव में मरने के लिए यह जरूरी है कि अपनों से हटकर दूसरों के लिये भी कुछ किया जाये. जिन दूसरों से तुम्हे जीवन में इतना-इतना कुछ प्राप्त हुआ उनके निमित भी कुछ किया है कि नहीं? अपने व अपनों के लिए तो सुख बटोरे परन्तु जिनकी कुर्बानियों व खून पसीने से सब सुख लिये उनके दुखी जीवन में भी सुख भरने की कोशिश की कि नहीं? याद रहे, तुम्हारे साथ जायेंगी तुम्हारी नेकियां और तुम्हारी कुर्बानियां, तुम्हारा त्याग और परोपकार.

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. शा. - 29/18/81

बोध–कथा

गरम जामुन

बहुत पुरानी बात है. सिन्ध में एक बुढ़िया रहती थी. वह बहुत विदुषी थी. वह बहुत सुन्दर कविताएं भी रचती थी. उसकी कविताओं से मुग्ध होकर लोग उसका आदर करते थे. इस कारण उसका घमण्ड बहुत बढ़ गया.

एक रोज वह कहीं जा रही थी. सड़क के किनारे जामुन के पेड़ थे. काले-काले जामुन पेड़ो की डालियों पर लटक रहे थे. जामुनों को देखकर उसके मुख में पानी भर आया. पर पेड़ बहुत ऊंचे थे. बेचारी बुढ़िया क्या कर सकती थी? बुढ़िया ने देखा कि एक पेड़ के ऊपर एक लड़का डाल पर बैठकर जामुन खा रहा था. लड़के को देख बुढ़िया ने कहा बेटा- 'मैं बहुत भूखी हूं, मुझे भी कुछ जामुन खिलाओ.'

यह सुन लड़के ने बुढ़िया से पूछा, 'नानी, आपको गरम-गरम जामुन चाहिए या ठण्डे-ठण्डे?'

यह सुन बुढ़िया अचम्भे में पड़ गई. उसने लड़के से पूछा, 'बेटा कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए? कहीं जामुन भी गरम होते हैं. यह तुम्हारा भ्रम मात्र है.'

लड़के ने फिर कहा, 'नानी, आप तो विदुषी हैं. आपका नाम सुनते ही सिन्ध के लोग व बड़े-बड़े विद्वान आपके सामने सिर झुकाते हैं. फिर यह छोटी-सी बात आप नहीं समझीं तो यह आपकी ही कमी है. मैं पागल थोड़े ही हूं. खैर अब आप कहिए कि आप गरम-गरम जामुन खाएंगी या ठण्डे-ठण्डे.'

लड़के की बात सुनकर बुढ़िया चकित थी. उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि जामुन गरम कैसे होते हैं. फिर भी वह यह रहस्य समझने के लिए आतुर थी. उसने लड़के से कहा, 'बेटा, तुम मुझे गरम-गरम जामुन ही खिलाओ.' लड़का बोला-'अच्छी बात है.' यह कह उसने एक डाल को जोर से हिलाया. खूब पके-पके काले जामुन धरती पर बिछ गए. बुढ़िया उन्हें उठाकर धूल फूंक-फूंक कर खाने लगी. यह देख लड़के ने पूछा, 'क्यों नानी, जामुन तो काफी गरम हैं न?'

बुढ़िया ने उत्तर दिया है, 'बेटा कहां? ये तो काफी ठण्डे हैं.'

लड़के ने कहा, 'अच्छा नानी आप तो कहती हैं ये गरम नहीं हैं तो फिर आप इन्हें फूंक-फूंक कर क्यों खा रही हैं?' कहकर लड़का हंस पड़ा. बुढ़िया को अपनी भूल मालूम हुई. वह बहुत शर्मिन्दा हुई. उसे एक छोटे से लड़के ने पराजित कर दिया था उसका घमण्ड चूर-चूर हो गया. वह वहां से चुपचाप आगे बढ़ गई.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर हरिओम ऑफसेट, कम्पू, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया।

सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : ०७५१-२३२७४२७, श्रीचंद पंजवानी, फोन : ०७५१-२४५४१८३

सूचना



समस्त सम्माननीय सद... उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह जाँचकर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए

– व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
NAKA MADAR, **AJMER (RAJ)**